सप्तम संस्करण
सत्र - 2023-24

महाविद्यालयीन पत्रिका

स्पंदन

अटल बिहारी वाजपेयी

शासकीय महाविद्यालय, पाण्डातराई
जिला - कबीरधाम (छ.ग.)

Website : abvgcp.ac.in,   Email : pandataraigovtcollege3@gmail.com

विविध कार्यक्रम

राष्ट्रीय सेवा योजना
रेड रिबन क्लब (RRC)

GPS Map Cam
Pandatarai, Chhattisgarh, India
58XX+FJ8, Pandatarai, Chhattisgarh 491559,
India

GPS Map Camera
Pandatarai, Chhattisgarh, India
58XX+FJ8, Pandatarai, Chhattisgarh 491559, India
Lat 22.198988°

GPS Map Camer
Pandatarai, Chhattisgarh, India
58XX+FJ8, Pandatarai, Chhattisgarh 491559, India
Lat 22.199188°

राष्ट्रीय सेवा योजना

संपादक मण्डल

संरक्षक / प्राचार्य

डॉ. लखन कुमार तिवारी

संपादक

डॉ.द्वारिका प्रसाद चन्द्रवंशी

सदस्य

डॉ. मुकेश कुमार त्यागी

श्री शिवराम सिंह श्याम

श्री बिरेन्द्र कुमार

कु. ममता चन्द्रवंशी

स्पंदन

(सप्तम संस्करण)

सत्र : 2023.-24

इसमें प्रतिभाओं को हँसते - गाते पाया।
होकर अभिव्यक्त भावों को मुस्काते पाया।
'स्पंदन' है ये इस महाविद्यालय के हृदय का,
इसमें संवेदना को अपना हाल सुनाते पाया।

:: प्रकाशक ::

अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय

पाण्डातराई, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

Website : abvgcp.ac.in, Email : pandataraigovtcollege3@gmail.com

मुक्ति के क्षणों में

बेनकाब चेहरे हैं, दाग बड़े गहरे हैं,
टूटता तिलिस्म आज, सच से भय खाता हूँ,
गीत नहीं गाता हूँ।

लगी कुछ ऐसी नजर, बिखरा शीशे सा शहर,
अपनों के मेले में, मीत नहीं पाता हूँ,
गीत नहीं गाता हूँ।

पीठ में छुरी सा चाँद, राहु गया रेख फांद,
मुक्ति के क्षणों में बार - बार बंध जाता हूँ
गीत नहीं गाता हूँ।

- स्व. श्री अटल बिहारी बाजपेयी
(भारत रत्न)

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्र.	क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्र.
01.	हिन्दी विभाग	01	20.	कर्म से बदलती है / कॉलेज का पहला	26
02.	समाज शास्त्र	03	21.	किताब और मनुष्य	27
03.	रसायन विभाग	04	22.	चिंतन / कविता	28
04.	समाज शास्त्र विभाग	06	23.	बड़ा बनना है तो	29
05.	वनस्पति शास्त्र	08	24.	विद्यार्थी और आत्महत्या	30
06.	कॉमर्स क्या है ?	09	25.	आज कल माता-पिता	31
07.	वाणिज्य में पढ़ाई करने के बाद	10	26.	बेस्ट एजुकेशन / छोटा सा गांव	32
08.	भारत के आर्थिक शक्ति	11	27.	केमिकल सोसायटी	33
09.	**WHYWESTUDY ZOOLOGY**	12	28.	एक कदम व्यवसाय / प्रभु की भक्ति	34
10.	इतिहास	14	29.	इंसान / स्वाभिमान	35
11.	इंग्लिश डिपार्टमेंट	16	30.	माँ का महत्व	36
12.	पचराही माता कंकालीन दर्शन	17	31.	चन्द्रयान / संसार में श्रेष्ठ क्या है ?	37
13.	समाज / सामाजिक एकता	19	32.	कोशिश से कामयाबी	38
14.	स्वस्थ्य समाज / आत्महत्या	20	33.	कविता / विज्ञान पर कविता	39
15.	जीने की आस / आज का दौर	21	34.	कविता / कहानी	40
16.	एक विद्यार्थी का जीवन	22	35.	करके 12 वीं पास / इस कहानी से	41
17.	बेटी बचाओं / बचपन की जिंदगी	23	36.	माता-पिता का दुःख	42
18.	मेरी प्रेरण / बचपन की यादें	24	37.	माँ की दुनियाँ / क्या आप युवा है ?	43
19.	नारी पर अत्याचार / रोकने के उपाय	25	38.	जिन्दगी / बेटी के लिए दो शब्द	44

प्राचार्य की कलम से...

हौसले बुलंद कर रास्तों पर चल दे...
तुझे तेरा मुकाम मिल जाएगा।

महाविद्यालय की यह पत्रिका 'स्पन्दन' का यह अंक महाविद्यालय परिवार के बुलंद हौसले का प्रयास है। जो सपने देखता है वहीं उन्हें पूरा करने की हिम्मत जुटा पाता है। हर मुश्किल में छिपा होता है एक नया मौका, बस उसे पहचानने की जरुरत है। सफलता की राह पर चलने का पहला कदम है, खुद पर विश्वास। विफलता केवल एक और मौका है फिर बेहतर शुरुआत करने का। आत्मविश्वास ही सफलता की पहली सीढ़ी है। जब तक आप खुद हार नहीं मानते कोई भी आपको हरा नहीं सकता। रास्ते कभी खत्म नहीं होते, बस चलने का हौसला होना चाहिए।

हमारा आज का युवा ही देश का भविष्य है। पारंपरिक ज्ञान के साथ तकनीकी और सामयिक शिक्षा आवश्यक है। महाविद्यालय इस ओर प्रयासरत है। हमारा आज का युवा जब पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होता है तो यह भूल जाता है, भौतिकवाद की अति से प्रभावित संम्पूर्ण पाश्चात्य जगत आध्यत्मिक संचेतना के विकास के लिए भारत की ओर ही उन्मुख है। हम इस गौरवशाली परंपरा के वाहक हैं इसलिए हमें पाश्चात्य जगत को समृद्ध) संस्कृति से ज्ञान और विज्ञान तो आवश्यक ही ग्रहण करना है, परन्तु अपनी आध्यात्मिक चेतना की पूंजी की कीमत पर नहीं।

'स्पंदन' की यह परंपरा निरंतर चलती रहे, इसी आकांक्षा के साथ यह ''स्पंदन'' आपके समक्ष प्रस्तुत है

शुभकामनाओं सहित....

डॉ. लखन कुमार तिवारी
प्राचार्य

संपादकीय

"विद्यार्थी कल आज और कल"

विद्यार्थी शब्द का संधि विच्छेद करें तो विद्या+अर्थी होता है, जिसका तात्पर्य है - विद्या को अर्थ (धन) की तरह ग्रहण करना। अर्थात जिस तरह व्यक्ति धन को पूरी तन्मयता से मेहनत कर अर्जित करता है और उस धन से बहुत प्रेम करता है तथा और धन की कामना मन में संजोए रखता है। समाज में बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया कहावत भी प्रचलित है, जो अर्थ या धन की महत्ता को स्वतः सिद्ध करती है। आज इस धन के अर्जन के लिए व्यक्ति बुरे से बुरा काम या अपराध तक को अंजाम दे रहा है, जो उसके अर्थलोलुपता या धन से प्रेम की ओर संकेत करता है। जैसे विविध हथकंडे अपना कर व्यक्ति धनार्जन करता है जो उसके अर्थलिप्सा को दर्शाता है, वैसे ही एकाग्रता, तन्मयता, लगन अगर, विद्या प्राप्ति में व्यक्ति लगा दे तो विद्या उसे कहाँ से कहाँ पहुँचा सकती है। उसकी सारी कामनाओं को सहजता से वैधानिक रुप से पूरा कर सकती है, उसे धन के साथ मान-सम्मान भी दिला सकती है। उसे सर्व चिंता से मुक्त कर सकती है। इसी विद्या के संबंध में कहा भी जाता है -

''सा विद्या या विमुक्तये'' अर्थात विद्या वही है जो मुक्त (कामनाओं से) कर दें।

मैं अपने व्याख्यान में अक्सर कहा करता हूँ कि दुनिया में सबसे सरल काम विद्या प्राप्त करना या पढ़ाई करना है विद्यार्थी इस बात पर चिंतन करे कि उन्हें 10 घंटे कड़ी शारीरिक मेहनत करनी है या आराम से बैठकर कुछ घंटे पढ़ाई।

पहले के जमाने में विद्या प्राप्त करना कठिन होता था, गुरुकुल में जाकर उनके अनुशासन में रहकर विद्या प्राप्त करना पड़ता था, जो सबके लिए सहज भी नही था। आज इसे सरकार ने सर्वसुलभ बना दिया है, फिर भी विद्यार्थियों का झुकाव इस तरफ कम ही देखने को मिल रहा है। आज का विद्यार्थी भ्रमित और लक्ष्यहीन ज्यादा प्रतीत हो रहा है। इसके पीछे पारिवार से अधिक सामाजिक माहौल जिम्मेदार है। आज व्यक्ति बिना कमाए सब कुछ प्राप्त करना चाहता है। सोशल मीडिया के तामझाम में व्यक्ति खो गया है, मोबाईल प्रत्येक के हाथ में है, जिसमें से अच्छाई को नही, बुराई को ग्रहण किया जा रहा है। आज का विद्यार्थी वर्ग, युवा पीढ़ी लक्ष्यहीन होकर मानसिक अवसाद का शिकार हो रहा है। उन्हें विविध प्रकार की लत लग रही है। आज के युवा तथा विद्यार्थी वर्ग के आचार व्यवहार को देखकर उनका आने वाला कल उन्हें मनोवांछित फल देने वाला नही लग रहा है। समाज में एक अजीब सा परिवर्तन कर दौर चल रहा है, जो समाज हितैषी तो बिलकुल नही लग रहा है।

विद्यार्थी को इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है, क्योंकि आज का विद्यार्थी कल का इस देश का संचालक है। कल के गुरुकुल की परंपरा से शिक्षा ग्रहण करने वाला विद्यार्थी आज सोशल मीडिया में सक्रिय है, अवसाद पीड़ित हो रहा है। तो आने वाला कल इसके लिए कैसा भविष्य लेकर आएगा, ये बड़ा ही चिंतन का विषय है।

- डॉ. द्वारिका प्रसाद चंद्रवंशी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

महाविद्यालय परिवार

डॉ. लखन कुमार तिवारी

प्राचार्य एवं संरक्षक

- राजनीति विज्ञान विभाग
  डॉ. लखन कुमार तिवारी

- हिन्दी विभाग
  डॉ. द्वारिका प्रसाद चंद्रवंशी
  श्री बुद्धदेव (अतिथि व्याख्याता)

- रसायन शास्त्र विभाग
  डॉ. मुकेश कुमार त्यागी
  सुश्री टिकेश्वरी केशरी (अतिथि व्याख्याता)

- वाणिज्य विभाग
  श्री शिवराम सिंह श्याम
  श्रीमती पूर्वा गुप्ता (अतिथि व्याख्याता)

- अंग्रेजी विभाग
  श्री सूरज कुमार ओगरे (अतिथि व्याख्याता)

- इतिहास विभाग
  श्रीमती संगीता चंद्रवंशी (अतिथि व्याख्याता)

- जन्तु विज्ञान विभाग
  सुश्री मीनाक्षी देवांगन (अतिथि व्याख्याता)

- वनस्पति विज्ञान विभाग
  श्रीमती कामिनी वर्मा (अतिथि व्याख्याता)

- समाज शास्त्र
  श्रीमती सीमा चंद्रवंशी (अतिथि व्याख्याता)
  श्री धनंजय कर्ष (अतिथि व्याख्याता)

- **श्री अजय जायसवाल**
  सहायक ग्रेड - 02

- **श्री दीपक कुमार गुप्ता**
  श्री चंद्रकुमार जायसवाल
  प्रयोगशाला तकनीशियन

- **श्री संतोष कुमार साहू**
  श्री अभिषेक गुप्ता
  प्रयोगशाला परिचारक

- **श्री दिनेश कुमार राज**
  श्री विनय कुमार शर्मा
  भृत्य

- **श्री लुकमान हकीम खान**
  कम्प्यूटर ऑपरेटर (जनभागीदारी)

- **श्री सुकचंद ध्रुव**
  फर्रास (जनभागीदारी)

- **श्री जीतराम चंद्रवंशी**
  चौकीदार (जनभागीदारी)

- **श्री फुलचंद धुर्वे**
  माली (जनभागीदारी)

महाविद्यालय का परिचय

सुप्रसिद्ध स्वयंभू शिवलिंग श्री जालेश्वर महादेव धाम छत्तीसगढ़ के लघु काशी के नाम से जाना जाने वाला ग्राम डोंगरिया कला के समीप नगर पंचायत पाण्डातराई में जनभावनाओं के अनुरुप दिनांक 28.06.2011 को शासकीय नवीन महाविद्यालय में प्रथम वर्ष की कक्षाएँ स्नातक स्तर पर कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय में आरम्भ हुई। महाविद्यालय का संचालन शासकीय कन्या उ.मा. विद्यालय पाण्डातराई के नये भवन से किया जाता रहा तत्पश्चात दिनांक 22.02.2015 को इसे भव्य नवनिर्मित भवन में स्थानांतरित किया गया। वर्ष 2018-19 में इस महाविद्यालय को उच्च शिक्षा विभाग महानदी भवन नवा रायपुर के द्वारा तीन विषयों यथा हिन्दी साहित्य, समाजशास्त्र एवं रसायनशास्त्र में स्नातकोत्तर कक्षाएँ प्रारंभ हुई ।

वर्तमान में प्रथम सेमेस्टर से चतुर्थ सेमेस्टर तक की कक्षाएँ संचालित हो रही है। पहले महाविद्यालय पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय से संबद्ध था, वर्तमान में हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग की संबद्धता में संचालित हो रहा है।

हिन्दी विभाग

अटल बिहारी वाजपेयी शास.महा. पाण्डातराई, जिला - कबीरधाम (छ.ग.) में सत्र 2018-19 से हिन्दी विभाग संचालित है। इस महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर अनिवार्य विषय के रुप में आधार पाठ्यक्रम हिन्दी भाषा की कक्षाएँ यथा बी.ए. / बी.कॉम / बी.एस-सी. संचालित है। बी.ए. (स्नातक) में हिन्दी साहित्य एक वैकल्पिक विषय के रुप में सम्मिलित है। जिसे छात्र / छात्राओं द्वारा सर्वाधिक प्रशंसनीय विषय के रुप में चुना जाता रहा है और परीक्षा परिणाम विगत कुछ वर्षो से उत्कृष्ट रहा है ।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि स्नातकोत्तर स्तर पर सन् 2018 -19 से इस महाविद्यालय में एम.ए. हिन्दी की कक्षा प्रथम सेमेस्टर से प्रारंभ हुई। जिसमें छत्तीसगढ़ शासन उच्च शिक्षा विभाग महानदी भवन नवा रायपुर द्वारा 30 सीटे प्रदान की गई। इस विषय में प्रारंभ से लेकर अभी तक का परीक्षा परिणाम उत्कृष्ट रहा है। इस महाविद्यालय में वर्तमान में हिन्दी विषय में प्रथम से लेकर चतुर्थ सेमेस्टर तक की कक्षाएँ संचालित हो रही है ।

इस महाविद्यालय के हिन्दी विषय में कुछ छात्र-छात्राओं ने विश्वविद्यालय की प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त किया है। इस महाविद्यालय में हिन्दी विभाग में 01 सहायक प्राध्यापक तथा 01 प्राध्यापक का पद स्वीकृत है। जिसमें सहायक प्राध्यापक के पद पर डॉ. द्वारिका प्रसाद चन्द्रवंशी (विभागाध्यक्ष हिन्दी) कार्यरत है और प्राध्यापक पद के विरुद्ध (अतिथि व्याख्याता के रुप में श्री बुद्धदेव कार्यरत है ।

विभाग के उद्देश्य -:

1. हिन्दी भाषा के प्रयोजनात्मक स्वरुप का सामान्य ज्ञान प्रदान करना ।
2. कम्प्यूटर में हिन्दी भाषा के प्रयोग की आवश्यकता के अनुरुप कम्प्यूटर की कार्यप्रणाली की आरंभिक जानकारी से अवगत होने के लिये प्रेरित करना ।
3. हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए कार्य तथा प्रयास करना ।
4. हिन्दी को बोलने पढ़ने लिखने तथा आत्मसात करने पर बल देना ।
5. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता से परिचित कराना ।

विभाग में संभावनाएँ -:

1. विद्यार्थियों के लिए हिन्दी विषय में अपार संभावनाएं है इस विषय के अध्ययन / अध्यापन द्वारा स्कूल स्तर पर सहा. शिक्षक, व्याख्याता तथा महाविद्यालय / विश्वविद्यालय स्तर पर प्राध्यापक, सहप्राध्यापक एवं सहायक प्राध्यापक पद पर चयनित होकर भविष्य बनाया जा सकता है ।

2. हिन्दी विषय का अध्ययन करके सर्वोच्च न्यायालयों / उच्चन्यायालयों में अनुवादक के पद पर चयनित होकर सम्मान जनक स्थान प्राप्त किया जा सकता है ।

3. हिन्दी विषय का अध्ययन करके संघ लोक सेवा आयोग मे भी वैकल्पिक विषय के रुप में हिन्दी साहित्य का चुनाव करके उच्च पदों को प्राप्त किया जा सकता है ।

स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यापन विषय

बी.ए. (I/II/III)	बी.कॉम. (I/II/III)	बी.एस.सी. (I/II/III)
विषय आधार पाठ्यक्रम हिन्दी भाषा (अनिवार्य) हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक) प्रश्न पत्र	विषय आधार पाठ्यक्रम हिन्दी भाषा (अनिवार्य) प्रश्न पत्र	विषय आधार पाठ्यक्रम हिन्दी भाषा (अनिवार्य) प्रश्न पत्र

स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यापन विषय

प्रश्न पत्र	प्रथम सेमेस्टर	प्रश्न पत्र	द्वितीय सेमेस्टर
प्रथम	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल एवं पूर्वमध्यकाल)	पंचम	उत्तरमध्यकाल एवं आधुनिक काल
		षष्ठम	मध्यकालीन काव्य
द्वितीय	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य	सप्तम	आधुनिक काव्य - 2 (प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता एवं समकालीन कविता)
तृतीय	आधुनिक काव्य -1 (छायावाद एवं पूर्ववर्ती काव्य)		
चतुर्थ	आधुनिक गद्य साहित्य (नाटक एकांकी एवं चरितात्मक कृति)	अष्टम	उपन्यास निबंध एवं कहानी (गद्य साहित्य)

प्रश्न पत्र	तृतीय सेमेस्टर	प्रश्न पत्र	चतुर्थ सेमेस्टर
प्रथम	साहित्य का सिद्धांत तथा आलोचना शास्त्र	पंचम	हिन्दी आलोचना तथा समीक्षा शास्त्र
		षष्ठम	हिन्दी भाषा
द्वितीय	भाषा विज्ञान	सप्तम	मीडिया लेखन एवं अनुवाद
तृतीय	कामकाजी हिन्दी एवं पत्रकारिता		
चतुर्थ	भारतीय साहित्य	अष्टम	जनपदीय भाषा और साहित्य (छत्तीसगढ़ी)

हिन्दी विभाग द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते है

(1) विभागीय सेमिनार	(3) विश्व हिन्दी दिवस (10 जनवरी)
(2) हिन्दी दिवस (14 सितम्बर)	(4) प्रतिवर्ष हिन्दी परिषद का गठन

विभागाध्यक्ष
डॉ. द्वारिका प्रसाद चन्द्रवंशी
(सहायक प्राध्यापक हिन्दी)

बुद्धदेव
अतिथि व्याख्याता (हिन्दी)

समाज शास्त्र

हमारे महाविद्यालय अटल बिहारी वाजपेयी शास. महाविद्यालय पाण्डातराई में रसायन विभाग में B.Sc. तथा M.Sc. की कक्षाएं संचालित है, जिसमें 400 विद्यार्थी B.Sc. प्रथम, द्वितीय, तृतीय में तथा M.Sc.- 48 विद्यार्थी अध्ययनरत है हमारे रसायन शास्त्र विभाग में NET / SET / CTET जैसी कई प्रतियोगी परिक्षाओं की तैयारी कराई जाती है साथ ही समय - समय पर कैरियर काउन्सलिंग एवं मोटिवेशन क्लास लिया जाता है तथा विभाग के द्वारा प्रत्येक वर्ष कैमिकल सोसायटी का गठन किया जाता है जिसमें महाविद्यालय के समस्त विज्ञान के विद्यार्थी एवं रसायन विज्ञान के सभी विद्यार्थियों की उपस्थिति में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, सहसचिव, कोषाध्यक्ष बनाया जाता है। इस केमिकल सोसायटी के जरिए सभी रसायन के विद्यार्थीयों को उनके प्रतिभा को जागृत कर, समय - समय पर मोटिवेट कर उन्हे महाविद्यालय में ऐसा माहौल दिया जाता है जिससे वे अपनी बातें सभी के समक्ष रखे और समाज के प्रति उनके दायित्वों को बताकर समाज में अपने दायित्व निर्वहन करने के लिए अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन CHEMICAL SOCIETY के द्वारा कराई जाती है। रसायन विभाग के द्वारा बच्चों को सेमिनार देने का अवसर दिया जाता है तथा बाहर से MOTIVATIONAL SPEAKER बुलाये जाते है ताकि उनकों अपने CAREER में कोई भी प्रकार की असुविधा न हो । विभाग के द्वारा आस-पास के महाविद्यालयों से MOU कराकर SPECIAL TEACHER बुलाये जाते है ताकि बच्चों को EXTRA KNOWLEDGGE मिल सके रसायन शास्त्र में बच्चों को रसायन की भूमिका कहाँ-कहाँ होती हैं में बताया जाता है। रसायन कहने को एक छोटा सा शब्द है, लेकिन एक शब्द मे पूरा जीवन समाहित है। रसायन के द्वारा हम खाना बनाना सीखते है, बिना रसायन खाने के स्वाद नही लाया जा सकता। जीवन मे भीरसायन बहुत ही महत्वपूर्ण है। यदि हमे एक किसान बनना है तो भी हमें रसायन की आवश्यकता होगी। उर्वरक को जानने तथा अपनी मिट्टी की आवश्यकता को जानने के लिए रसायन जानना आवश्यक है। यदि हम किसान नही बनकर कोई उद्योग में जाना चाहते है तब भी हमे रसायन को जानने की आवश्यकता होगी। यदि घरेलू औरत बनना है तब भी या एक सफल प्रधान बनना है तब भी। इसलिए रसायन को जानना हरेक बच्चो के लिए आवश्यक है। चाहे वह इंजीनियर हो डॉक्टर हो उद्योगपति हो। सभी को रसायन की आवश्यकता कही न कही पड़ेगा ही । इसलिए हमें रसायन के प्रति उत्सुकता दिखाने की आवश्यकता है ।

टिकेश्वरी केशरी
अतिथि व्याख्याता
रसायन शास्त्र

रसायन विज्ञान : एक परिचय

CHEMISTRY : AN INTRODUCTION

रसायन विज्ञान की प्रमुख शाखाएँ	रसायन विज्ञान का महत्व एवं विस्तार	भोजन	स्वास्थ	पर्यावरण	सुख-सुविधा एवं विलासिता	सूखा एवं युद्ध

कार्बनिक रसायन | अकार्बनिक रसायन | विश्लेषणात्मक रसायन | भौतिक रसायन

रसायन विज्ञान (CHEMISTRY)

कार्बनिक रसायन	अकार्बनिक रसायन	विशेषणात्मक रसायन	भौतिक रसायन	जैव रसायन
औषधि रसायन	जैव अकार्बनिक	फॉरेंसिक रसायन	प्रकाश रसायन	आण्विक जैव रसायन
बहुलक	भू-रसायन	पर्यावरण रसायन	रसायन गतिकी	रोगविषयक जैव रसायन
विन्यास रसायन	नाभिकीय रसायन	रसायन जैव	तापीय रसायन	एजाइमोलॉजी
भौतिक का बर्निक रसायन	पदार्थ संशिलष्ट	रसायन;ठप्ध |छस्ल्द्ध	कवान्टम केमिस्ट्री	कृषि जैव रसायन
धात्विक रसायन	अकार्बनिक रसायन	;ठभ्म्डैप्ज्त्ल्द्ध	स्पेक्ट्रोकोपी	अनुवांशिकी

रसायन विज्ञान का महत्व एवं विस्तार

मानव जीवन से सम्बंधित प्रत्येक क्षेत्र में रसायन विज्ञान ने अपने महत्व एवं उपयोगिता सिद्ध की है। एक ओर विषय के रुप में विज्ञान प्रकृति में व्याप्त प्रत्येक पदार्थ की संरचना एवं गुणधर्म को समझने में सहायक है। वहीं दूसरी ओर रासायनिक सिध्दांतो के अनुप्रयोग मानव जीवन की अनेक समस्याओं कें समाधान आवश्यकताओं की पूर्ति आदि में सहायक हैं। इसके प्रमुख उदाहरण निम्नवत है ।

भोजन (FOOD)

रासायनिक उर्वरको (chemical fertilizers) :- ने खाद्यान्न, फल, सब्जी एवं अन्य फसलों के उत्पादन में वृद्धि की है, तथा कीटनाशकों की सहायता से फसल सुरक्षा सुनिश्चत की गई है । इस प्रकार विश्व की विशाल जनसंख्या की आवश्यकताओ की पूर्ति सम्भव हो सकी है ।

स्वास्थ्य (HEALTH)

रसायन विज्ञान नें औषधि रसायन के माध्यम से विभिन्न औषधियों का निर्माण कर चिकित्सा सुविधा की उपलब्धता सुनिश्चित करने में सहायता प्रदान करता है ।

उदाहरण :- पीड़ानाशक, प्रति जैविक, विसंक्रामक, निश्चेतक, जीवन रक्षक, औषधिया आदि ।

परिवरण संरक्षण (ENVIRONMENT CONSERVATION)

पर्यावरण अनुकूल रसायनों के निर्माण रेफ्रिजरेटर्स मे क्लोरो-क्लोरो कार्बन्स के स्थान पर हाइड्रोक्लोरो-फ्लोरो कार्बन्स एवं हाइड्रोक्लोरोकार्बन (HFCS) का विकल्प पर्यावरण संरक्षण में सहायक है ।

सुरक्षा एवं युद्ध (SAFETY AND WAR)

विभिन्न प्रकार के विस्फोटको के निर्माण में शांति काल मे सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ रखने में तथा सुद्ध के दौरान शक्तिशाली प्रतिरोध मे सहायता मिली है ।

उदाहरण :- TNT हाई-नाइट्रो टालुइन, नाइट्रोग्लिसरीन , डायनामाइट आदि ।

सुख-सुविधा एवं विलासिता (PLEASUR COMFORT AND LUXURIES)

रसायन विज्ञान ने मानव जीवन को अत्यधिक, सुविधायुक्त सुखमय बनाया है । इसके प्रमुख उदाहरण निम्न है ।

संश्लेषित रेशो :- SYNTHETIC FIBBER एवं रंगो के द्वारा सुंदर वस्त्रो का निर्माण

धातुकर्म :- METALLURGY के माध्यम से औद्योगिक विकास ।

समाजशास्त्र विभाग
समाज शास्त्र का परिचय

समाज शास्त्र को अंग्रेजी में SOCIOLOGY कहा जाता है । जो दो शब्दों SOCIO तथा LOGY से मिलकर बना है SOCIO लेटिन भाषा के SOCIUS शब्द से बना है जिसका अर्थ समाज है और LOGY ग्रीक भाषा के LOGOS शब्द से बना है। जिसका अर्थ विज्ञान या शास्त्र है। समाज शास्त्र शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांसीसी विद्वान आगस्ट काम्टे के द्वारा 1838 ई. में किया गया है इसलिए काम्टे को समाजशास्त्र का जनक कहा जाता है ।

समाज शास्त्र का महत्व :-

समाज और मानव जीवन का अध्ययन है समाज शास्त्र ये समूहों व्यक्तियों को समझने में सहायता प्रदान करता है साथ ही आत्म ज्ञान का बोध कराता है। आत्म ज्ञान व्यवहार को बढ़ाता है परोपकार की भावना आती है। सामाजिक संरचना रीति - रिवाजों मूल्यों परम्परओं, मान्यताओं का समायोजन है शिक्षा में समाजशास्त्र का महत्व सामाजिक शक्तियों को समझने नियंत्रित करने का प्रयास करता है और आर्थिक, सांस्कृतिक आवश्यकताओं को समझने एवं उनके विकास के लिए सहायक होता है । समाज कल्याण किया जा सकता है ।

समाज शास्त्र में अध्ययन से रोजगार के अवसर :-

समाज शास्त्र मानव समाज का अध्ययन है । समाज शास्त्र में एम.ए. करने वाले विद्यार्थियों के लिए विभिन्न रोजगार के अवसर है जो निम्न प्रकार से है।

(1)	Lecturer Sociology	(14)	Gender monitoring officer
(2)	Health and Nutrition officer	(15)	Superintendent darul amaan
(3)	Social welfare officer	(16)	Community develoment officer
(4)	Social Mobilization officer	(17)	Health educator
(5)	Social counselling officer	(18)	Parole and Probation officer
(6)	Superintend old age home	(19)	Social security officer
(7)	Manager industrias home	(20)	Social need officer
(8)	Medical social officer	(21)	Labor inspector
(9)	Deput superintendent jail	(22)	NGOS and all social sector
(10)	Asst superintendent jail	(23)	Population officer
(11)	Child protecation officer	(24)	Research assistand
(12)	Project director SPU	(25)	Suoerintendent bait UL mal
(13)	Assistant director local govt.		

समाज शास्त्र अध्ययन से रोजगार के अवसर प्राप्त होता है साथ ही साथ मानव सभ्यता संस्कृति रीति-रिवाज परिवार समुदाय से जुड़ने व समझने में सहायक होता और समाज में व्याप्त समस्याओं के समाधान करने में सहायता प्रदान करता है ।

समाजशास्त्र में अध्ययन विवरण

(स्नातक)

1. बी.ए. भाग -1 (समाज शास्त्र)
   - (1) समाज शास्त्र का परिचय
   - (2) समकालीन भारतीय समाज
2. बी.ए. भाग - 2
   - (1) जनजाति समाज का समाजशास्त्र
   - (2) अपराध और समाज
3. बी. ए. भाग - 3
   - (1) समाजशास्त्रीय विचार के आधार
   - (2) सामाजिक अनुसन्धान की पद्धति

(स्नातकोत्तर)

4. एम.ए. समाज शास्त्र प्रथम सेमेस्टर
   - (1) शास्त्रीय समाजशास्त्रीय परम्पराएँ
   - (2) अनुसंधान पद्धति का दार्शिनिक और वैचारिक आधार
   - (3) भारत में सामाजिक परिवर्तन
   - (4) ग्रामीण समाजशास्त्र
5. एम.ए. समाजशास्त्र द्वितीय सेमेस्टर
   - (1) शास्त्रीय समाज शास्त्रीय विचारक
   - (2) समाजशास्त्र में गणनात्मक शोध तकनीकि
   - (3) विकास का समाज शास्त्र
   - (4) भारतीय ग्रामीण समाज
6. एम.ए. समाजशास्त्र तृतीय सेमेस्टर
   - (1) शास्त्रीय समाजशास्त्रीय सिद्धांत
   - (2) भारत में सामाजिक आंदोलन
   - (3) भारतीय समाज के लिए अध्ययन के परिप्रेक्ष्य
   - (4) भारत में उद्योग और समाज
7. एम.ए. समाजशास्त्र चतुर्थ सेमेस्टर
   - (1) आधुनिक समाजशास्त्रीय सिद्धांत
   - (2) तुलनात्मक समाजशास्त्र
   - (3) समसामयिक मुद्दे
   - (4) अपराध शास्त्र सुधारात्मक प्रशासन

अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय पाण्डातराई में विगत 12 वर्षो से स्नातक स्तर एवं 6 वर्षो से स्नातकोत्तर स्तर पर समाज शास्त्र विषय संचालित है।

धनंजय कर्ष
अतिथि व्याख्याता
समाजशास्त्र

विभागीय लेख (वनस्पति शास्त्र)

प्रकृति के मनोहारी दृश्य बीच शोभायमान अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय पाण्डातराई कवर्धा जिले का एक उभरता हुआ महाविद्यालय है ।

इस महाविद्यालय में SCIENCE, ARTS एवं COMMERCE की कक्षाएं संचालित हो रही है । कुछ विषयों में स्नातकोत्तर की भी कक्षाएं चल रही है । SCIENCE के अंतर्गत यहां BOTANI, ZOOLGY एवं CHEMISTRY की कक्षाएं संचालित है । प्रतिवर्ष इस महाविद्यालय से SCIENCE विषय में बच्चे एडमिशन ले रहे है । एवं अच्छे अंको से पास हो रहे है ।

SCIENCE एक ऐसा विषय है, जिसकी पढ़ाई बिना PRACTICAL के संभव नही है। यहाँ व्यवस्थित PRACTICAL LAB है जहाँ PRACTICAL के माध्यम से विद्यार्थियों की समस्या का समाधान किया जाता है । समय - समय पर DEPARTMENT के द्वारा बच्चो के लिए प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाता है एवं छात्र / छात्राओं का उत्साहवर्धन किया जाता है ।

वनस्पति शास्त्र

Botany is the branch of biology that deal's with the study of plant”

वनस्पति विज्ञान, विज्ञान की वह शाखा है जो पौधो के जीवन रुपों और उनके कार्यो से संबंधित है । यह पौधो के विभिन्न पहलुओं जैसे उनकी वृद्धि, चयापचय, संरचना पारिस्थितिक भूमिका आदि की पहचान करता है। आमतौर पर पादप विज्ञान या पादप जीव विज्ञान के रुप में भी जाना जाता है

वनस्पति विज्ञान में हम पौधों में होने वाले परिवर्तनों की संपूर्ण जानकारी प्राप्त करते है । जैसा कि हम जानते है - कि पौधे हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण, लाभदायक एवं हितकारी होते हैं । असल में इनके बिना जीवन की कल्पना कर पाना मुश्किल है । वनस्पतियाँ धरती पर जीवन का मूलभूत अंश है । वनस्पतियाँ ही आक्सीजन छोड़ती है । वनस्पतियों से ही मानव को एवं अन्य जंतुओं को भोजन, रेशें, ईधन, औषधियाँ प्राप्त होती है । प्रकाश संश्लेषण की किया के द्वारा ही पौधे CO_2 सोखते है । पेड़ो से प्राप्त लकड़ियों से मनुष्य अन्य संरचनाओं का निर्माण करता है ।

वनस्पति विज्ञान की शाखाएं

(1) प्लांट एनाटॉमी
(2) पादप आकारिकी विज्ञान
(3) प्लांट जेनेटिक्स
(4) पादप कोशिका विज्ञान
(5) पादप पारिस्थतिकी
(6) पादप जैव रसायन
(7) प्लांट बायोफिजिक्स
(8) प्लांट टैक्सोनॉमी
(9) प्लांट बायोकेमिस्ट्री
(10) प्लांट माइक्रो बॉयोलॉजी
(12) प्लांट जीनो मिक्स
(13) पादप आण्विक जीव विज्ञान
(14) पैलियो बॉटनी
(15) एथनो बॉटनी
(16) आर्थिक वनस्पति विज्ञान
(17) आनुवंशिकी

वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में कैरियर

1. आप अपनी खुद की नर्सरी खोल सकते है ।
2. अगर आपकी रुचि खेती में है तो आप वनस्पति विज्ञान में B.Sc. कर सकते है जिससे आप तरह-तरह के पेड पौधों पर अध्ययन कर सकते है । साथ ही उनकी पैदावार को बढ़ाने के तरीके खोज सकते है ।
3. आप इतने B.Sc. करने के बाद M.Sc. भी कर सकते है । जिनके जरिए आप Botany में Scientist बन सकते है ।
4. Botany पढ़ने के बाद कृषि वैज्ञानिक, माइकोलाजिस्ट बायोफिजिस्ट, विज्ञान शास्त्री आदि ऑप्शन को चुनकर अपने करियर को बना सकते है ।
5. इसमें आप रिसर्च करके पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों को भी समझ तथा समझा सकते हैं ।

कामिनी वर्मा
अतिथि व्याख्याता
वनस्पति विज्ञान

COMMERCE क्या है

कॉमर्स (Commerce) का हिन्दी अर्थ वाणिज्य होता है। आसान भाषा मे कहें तो किसी उत्पाद या व्यवसाय का वह भाग जो उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं की उनके उत्पादको एवं उपभोक्ताओं के बीच विनियम से संबंध रखता है वाणिज्य कहलाता है ।

Commerce हमारे आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था का महत्व पूर्ण घटक है। इसी मे हम Retail transaition (खुदरा लेनदेन) से लेकर International trade (अंतराष्ट्रीय व्यापार) को करते है । हमें जैसे पता ही है कि जिस तरह की तेजी से हमारी तकनीकी और ज्यादा अग्रिम हो रही है वैसे ही दूसरी तरह पूरी दुनिया नजदीक आ रही है।

तकनीकी की वजह से Commerce के क्षेत्र मे भी कई सारे लगातार बदलाव हो रहे है । Commerce में E-Commerce और Mobile Commerce जैसी आधुनिक तकनीकी का इस्तेमाल हो रहा है जो व्यवसायों को ग्राहको तक आसानी से पहुँचने और जुड़ने मे मदद कर रही है । लेकिन दूसरी तरफ Globlization (वैश्विकरण) की वजह से ही कई सारी चुनौतियाँ भी सामने आ रही है। जैसे Payment Procesing, Cyber Security आदि

इस प्रकार Commerce को कुछ लोग व्यवसाय समझते है । लेकिन Commerce व्यवसाय नही होता बल्कि वह Business (व्यवसाय) का एक हिस्सा होता है जो उत्पादकों से ग्राहको तक तैयार था कच्चा माल का वितरण या लेनदेन करता है । मतलब वाणिज्य का लक्ष्य सिर्फ जो उत्पाद बनाते हैं, उनसे वह उत्पाद ग्राहको तक पहुँचाना होता है लेकिन व्यवसाय मे उस उत्पाद की शुरु से लेकर उसे बनाने मे उसका वितरण बिक्री उत्पाद संबंधित ग्राहक सेवा सब कुछ आता है।

वाणिज्य (Commerce) के उद्देश्य :-

1. वाणिज्य शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति में आर्थिक नागरिकता का विकास करना जिससे वह एक अच्छा उपभोक्ता उत्पादक, व्यापारी या उद्योगकर्ता बन सकें ।

2. कॉमर्स का उद्देश्य आर्थिक क्रियाओं व आर्थिक कल्याण से है। उन समस्त क्रियाओं से सम्बधित है जो धनापार्जन तथा धन के व्यय करने से सम्बधित है ।

3. इसका उद्देश्य व्यक्तियों को बैकिंग व्यवस्था आयात निर्यात लेखाकंन आदि से सम्बधित क्रियाओं का ज्ञान प्रदान करना होता है। ताकि विद्यार्थी किसी भी क्षेत्र में अपने जीवन का विकास करने के योग्य हो सकें

4. वाणिज्य का उद्देश्य उत्पादकों और उपभोक्ताओं दोनो के लाभ के लिए वस्तुओं और सेवाओं के समुचित प्रवाह को सुनिश्चित करना है ।

वाणिज्य में पढ़ाई करने के बाद करियर के कुछ अच्छे विकल्प

भारत में वाणिज्य के क्षेत्र मे भिन्न-भिन्न प्रकार के कैरियर विकल्प मौजूद है । एक व्यक्ति किसी क्षेत्र मे करियर विकल्प बनाने के पहले उस क्षेत्र के उत्कृष्टतम विशेषज्ञता हासिल करने पर विचार करता है । एक वाणिज्य का उत्कृष्ट विशेषज्ञ एक जिम्मेदार नागरिक की तरह अपने कंधो पर समाज के प्रति दायित्व का भार लेते हुए उत्कृष्टतम स्तर पर जीवन और अपने जिम्मेदारियों का निर्वहन करता है । जिसमे उत्कृष्टता, निष्पक्षता, सत्यता, पारदर्शिता और समायोजन जैसी विशेषता विरासत मे मिलती है। उस विरासत को आगे बढ़ाना ही हर नए वाणिज्य के विशेषज्ञ का काम है।

निम्नलिखित कैरियर विकल्प एक वाणिज्य के विशेषज्ञ के लिए उपलब्ध है, जिसमे से कोई भी वे अपना सकते हैं।

1.	टैक्स की प्रैक्टिस	10.	निवेश सलाहकार
2.	चार्टर्ड अकाउंटेंट (CA)	11.	इन्शुरेन्स (insurance) सलाहकार
3.	प्रबंधन परामर्श सेवाएँ	12.	बैंक में कर्मचारी
4.	आडिटिंग (Auditing)	13.	सेल्स मैनेजर
5.	वित्त विश्लेषक	14.	बजट विश्लेषक
6.	सरकारी / सिविल सेवाओं की तैयारी	15.	व्यवसाय सलाहकार
7.	उद्यमी (Business Man)	16.	कर अधिकारी
8.	अकाउंटेट (Acountent)	17.	सांख्यिकी सलाहकार या अधिकारी
9.	शेयर बाजार में ब्रोकर	18.	फण्ड सलाहकार व मैनेजर

अकेले उद्योग मे ही इनसे अधिक शाखाएँ है कि कोई भी वाणिज्य का विशेषज्ञ बड़ी आसानी से उद्योगों मे अपने कैरियर के लिए उपयुक्त विकल्प चुन सकते है ।

DEPARTMENT OF COMMERCE SUBJECTS

Class - B.com-i	Class - B.com-ii	Class - B.com-iii
A. Foundation course i. Hindi language ii. English language B. Three compulsary groups Group - i i. Financial Acounting ii. Business Communication Group - ii i. Business Mathematics ii. Business Regulatory Framework Group - iii i. Business Environment ii. Business Economics	A. Foundation course i. Hindi language ii. English language B. Three compulsary groups Group - i i. Corporate Acounting ii. Company law Group - ii I. Cost Acounting ii. Principal of business mangment Group - iii i. Business statisties ii. Fundametal of - Enterpreneceship	Foundation course i. Hindi language ii. English language Compulsary groups Group - i i. Income tax ii. Auditing Group - ii I. Indirect tax with G.S.T ii. Management Accounting Group - iii optional i. Financial managment ii. Financial market operations Option group (B)(marketing area) i. Principal of marketing ii. International marketing Option group (C) Commercial Area I. Information Technology and its Application in Business ii. Essertioness of E-commerce Option group (D) Money banking & Insurance area i. Fundamental of insurance ii. Money & Banking System

श्रीमती पूर्वा गुप्ता
अतिथि व्याख्याता
वाणिज्य विभाग

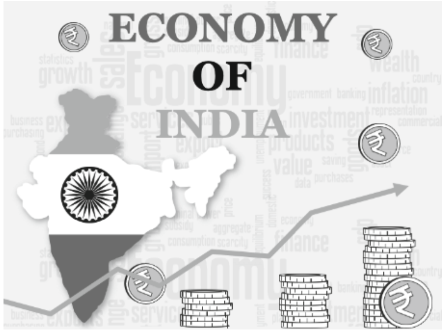

Economic Power India
भारत के आर्थिक शक्ति (अर्थव्यवस्था)

भारत 3750 अरब डॉलर की G.D.P. के साथ इस समय दुनिया की पांचवी सबसे बडी अर्थव्यवस्था (indon economy) है । पहले नंबर पर है अमेरिका इस पर चीन तीसरे पर जापान और चौथे स्थान जर्मनी है क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व मे सांतवे स्थान पर है | जनसंख्या में भारत का स्थान दूसरा था किन्तु वर्ष 2023 के मध्य से प्रथम स्थान पर है और केवल 2.4% क्षेत्रफल के साथ भारत विश्व जनसंख्या के 17.76% भाग को शरण प्रदान करता है ।

भारतीय अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्रोत :- उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था मे मुख्यस्थान रखता है | यह औसतन वित्त वर्ष 12 और वित्त वर्ष 21 के दौरान सक्त घरेलू उत्पाद का 31% था और इसने 12.1 करोड़ से अधिक लोगो को रोजगार दिया ।

भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार :- कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है जो ने केवल इसलिए कि इससे देश की अधिकांश जनसंख्या को खाद्य की आपूर्ती होती है, बल्कि इसलिए भी भारत की आधी से भी अधिक आबादी प्रत्यक्ष रुप से जीविका के लिए कृषि पर निर्भर है ।

वर्तमान मे भारत की आर्थिक स्थिति :- दुनिया भर की ऐजेंसियों ने भारत को सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था माना है, जिसका विकास दर वित्त वर्ष 2023 में 65-70 प्रतिशत रहेगी | सर्वेक्षण के अनुसार वित्त वर्ष 2023 के दौरान भारत के आर्थिक विकास का मुख्य आधार निजी खपत और पूंजी निर्माण रहा है, जिसने रोजगार के सृजन मे मदद की है ।

भारत इतनी तेजी से क्यो बढ़ रहा है ? :- भारत के मजबूत एफ.डी.आई. (FDI) प्रवाह को Google और Facebook जैसी वैश्विक प्रोद्यौगिकी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से निवेश के बडे प्रवाह से बढ़ावा मिला है | जो भारत के बडे तेजी से बढ़ते घरेलू उपभोक्ता बाजार की ओर आकर्षित है | साथ ही विनिर्माण कम्पनियो से प्रत्यक्ष विदेशी प्रवाह मे तेजी से वृद्धि हुई है ।

भारतीय अर्थव्यवस्था के तीन मुख्य क्षेत्र :- अर्थव्यवस्था मे तीन क्षेत्र होते है जिनके नाम है, प्राथमिक कृषि तथा सम्बधित गतिविधियाँ द्वितीय विनिर्माण तथा तृतीय सेवाएँ है ।

भारत मे कौन सी अर्थव्यवस्था है :- भारत ने दो प्रकार की आर्थिक प्रणालियो का अनुसरण किया है

1. पूँजीवादी
2. समाजवादी

अतः भारत की अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था है ।

2023 में भारत की अर्थव्यवस्था :- चालू वित्त वर्ष 2023-24 की अप्रैल - जून तिमाही मे तमाम रेटिंग ऐजेंन्सियो ने देश की G.D.P. Gronath (ग्रोथ) को 7.8-8.5 फीसदी के बीच रहने का अनुमान लगाया था | RBI ने April-June 2023 की तिमाही में G.D.P ग्रोथ 8.1 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था ।

अभिषेक कुमार गुप्ता
प्रयोगशाला परिचारक

WHYWESTUDY ZOOLOGY

Zoology is the study of animal their behaviour their physialogy and evalution as well as their interactions with each other and with their environment zoologists also study how animals evalved and the impact of environment change on their survival they search for ways tomanage wildlife populations and to conserve rare and endangered species such as takahe frogs and tuatara.

CAREER OPPORTUNITIES - a degree in zoology opens the don't to a wide variety of jobs and career options there are opportunities in government departments and ministries of fisheries agriculture and forestry and environment in these areas zoology graduates are involved with research harvest management and pest control as well as writing reports and developing and monitoring palicy graduates can find careers where they are responsible for the use and care of our natural resources and environment with regional and district boards there are also jobs for zoology graduates with crown research institutes (e.g. lndcare niwa) and private research organisation (eg cawthrom institute) zoology graduates are also employed in medical veteriaary and biotechnology laboratories.

WHAT WILL WE LEARN - in your first year you will learn about the biology of cwlls the biology of animals and the casics of statistics you will cover topics such as molecular biology cell ultrastructure and function genetics bacteria and viruses and theorise of evalution the course have a strong india flovour with an emphasis on the unique nature of the animals of india and their conservation problems in your second and third years you will continue yourstudy of animal diversity physiology and evolution with the option of in cliding papers from subjects such as ecology gentics statistics and computer modelling and marin science

CAN I COMBINE MY ZOOLOGY STUDY WITH OTHER SUBJECTS -

Many zoology students also major in another subject such as botony ecology and genetics other students complete a double degree in areas like law commerce and arts.

MEENAKSHI DEWANGON
GUEST LECTURER
ZOOLOOGY

विषय विस्तार

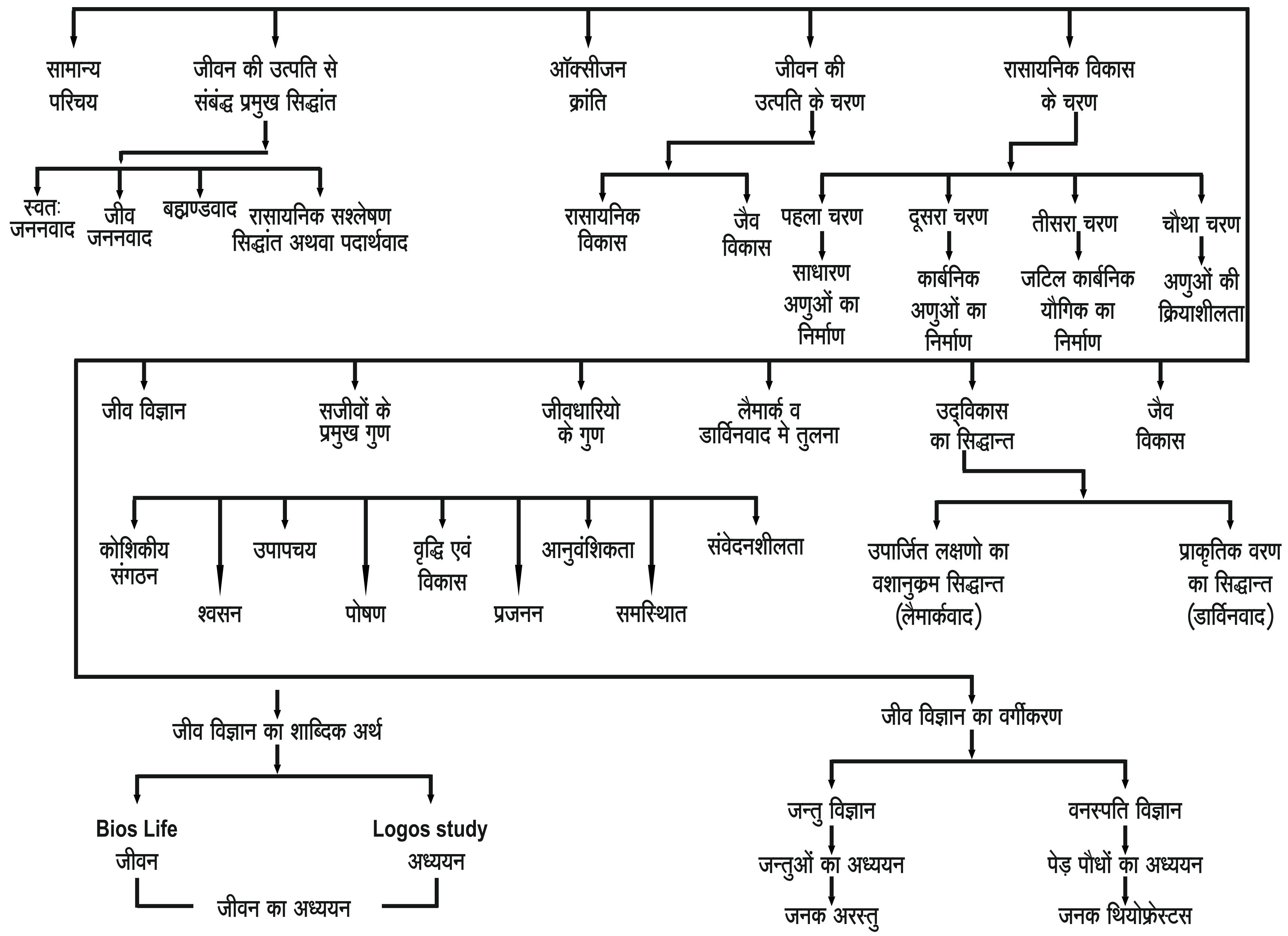
सामान्य परिचय
जीवन की उत्पति से संबंद्ध प्रमुख सिद्धांत
स्वतः जननवाद
जीव जननवाद
बह्मण्डवाद
रासायनिक सश्लेषण सिद्धांत अथवा पदार्थवाद
ऑक्सीजन क्रांति
जीवन की उत्पति के चरण
रासायनिक विकास
जैव विकास
रासायनिक विकास के चरण
पहला चरण
साधारण अणुओं का निर्माण
दूसरा चरण
कार्बनिक अणुओं का निर्माण
तीसरा चरण
जटिल कार्बनिक यौगिक का निर्माण
चौथा चरण
अणुओं की क्रियाशीलता
जीव विज्ञान
सजीवों के प्रमुख गुण
कोशिकीय संगठन
श्वसन
उपापचय
पोषण
वृद्धि एवं विकास
प्रजनन
आनुवंशिकता
समस्थिात
संवेदनशीलता
जीवधारियो के गुण
लैमार्क व डार्विनवाद मे तुलना
उद्विकास का सिद्धान्त
उपार्जित लक्षणो का वशानुक्रम सिद्धान्त (लैमार्कवाद)
प्राकृतिक वरण का सिद्धान्त (डार्विनवाद)
जैव विकास
जीव विज्ञान का शाब्दिक अर्थ
Bios Life
जीवन
Logos study
अध्ययन
जीवन का अध्ययन
जीव विज्ञान का वर्गीकरण
जन्तु विज्ञान
जन्तुओं का अध्ययन
जनक अरस्तु
वनस्पति विज्ञान
पेड़ पौधों का अध्ययन
जनक थियोफ्रेस्टस

विभागीय लेख - (इतिहास)

इतिहास क्या है ? - मानव की विशिष्ट घटनाओ का नाम ही इतिहास होता है | इतिहास के अंतर्गत अब तक के घटित घटनाओं का या उससे संबंध रखने वाली घटनाओं का काल - क्रमानुसार वर्णन होता है | इतिहास ज्ञान की वह शाखा है, जिसमे हम मानव जाति से संबंधित पिछली घटनाओं का अध्ययन करते है | प्राचीनता से नवीनता की ओर आने वाली घटनाओं का अध्ययन इतिहास है | भारतीय संस्कृति में इतिहास शब्द का तात्पर्य है ´´ ऐसा वस्तुतः हुआ है ´´ व्यक्ति समाज देश की महत्वपूर्ण विशिष्ट एवं सार्वजनिक क्षेत्र की घटनाओं का कालक्रम से लिखा हुआ विवरण तथ्यों घटनाओं का क्रमानुसार विवेचन को इतिहास कहा जाता है |
सामान्य शब्दों में कहे हो इतिहास वह घटना होती है जो निश्चित रुप से घटित हो चुकी है | उसको इतिहास कहते है |

इतिहास के पिता या जनक हेरोडोटस को कहा जाता है | हेरोडोटस कभी भी भारत नही आया था परन्तु वह पहले इतिहासकार थे जिन्होने घटनाओं को व्यवस्थित रुप से दर्ज किया था | हेराडोटस ने पेलोपोनेसियन युद्ध को इतिहास का विषय बनाया था | और अपनी लिखी किताब ´´हिस्टोरिक´´ की मदद से इतिहास के लेखन की नींव डाली वे यूनान के प्रथम इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ता थे, जिनका संस्कृत नाम हरिदत्त था | रोमन वक्ता और लेखक राजनेता सिसरो से इतिहास के पिता का खिताब अर्जित किया था |

इतिहास का महत्व - इतिहास हमें मानव प्रकृति के विभिन्न आयामों एवं पक्षो से अवगत कराता है | इसके अध्ययन से हमे सभ्यता के क्रमिक विकास का ज्ञान होता है | इतिहास का महत्व सिर्फ परीक्षाओं तक सीमित नही है, इतिहास हमें अतीत में हुई घटनाओं की जानकारी देता है, जिससे हम अपने अतीत को समझ सकतें है | वर्तमान तथा आने वालों भविष्य की घटनाओं को हम ज्यादा बेहतर समझ पाते है | क्योंकि हम सभी जानते है कि इतिहास खुद को दोहराता है |
इतिहास एक ऐसा महत्वपूर्ण विषय है जो हमारे समाज को आईना दिखाता है | इतिहास मानव की विज्ञान और कला भाषा तथा साहित्य सामाजिक, राजनैतिक धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन दार्शनिक तथा आर्थिक विकास से संबंधित सभी समस्याओं का हल प्रदान करता है | इतिहास मानव के भविष्य के लिए पथ प्रदर्शन करता है | वर्तमान समाज को समझने के लिए आवश्यक है | कि हम विकास के उन विभिन्न सोपानों को जान सके जिनमें से गुजकर यह समाज वर्तमान स्थिति में आया है | किसी भी राष्ट्र के सुरक्षित भविष्य के लिए भी इतिहास का बहुत महत्व होता है | जैसा कि अली कहते है | इतिहास की उपेक्षा करने वाले राष्ट्र का कोई भविष्य नही होता है | इस प्रकार हम कह सकते है कि इतिहास का संबंध सभी विषयों से होता है | क्योकि सभी विषयों का इतिहास होता है इसलिए छात्र जीवन में इतिहास का विशेष महत्व होता है क्योकि कोई भी प्रतियोगी परीक्षा बिना इतिहास के सम्पन्न नही होता है | इसलिए प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने के लिए इतिहास एक महत्वपूर्ण विषय होता है |

रोजगार के अवसर - इतिहास विषय को पढ़ने के बाद आप केवल किसी समाज या सभ्यता के सामाजिक स्तर को ही नही अपितु आर्थिक राजनैतिक और धार्मिक पहलू को भी जान लेते हैं | इसमें जहां एक तरफ प्राचीन दौर का पता चलता है तो वही दूसरी ओर आने वाली पीढ़ी भी इसके ज्ञान से मार्गदर्शित होती है | हालाकिं इतिहास विषय को पढ़ने वाले कितने ही विद्यार्थियों को इससे जुड़े विभिन्न कैरियर विकल्पो का ज्ञान नही होता है | ऐसे में वह केवल इसे एक विषय के तौर पर पढ़कर ही रह जाते है | जबकि इतिहास पढ़ने के बाद आप आर्कियोलॉजिस्ट, इतिहासकार, म्युजियोलॉजिस्ट और शोधकर्ता आदि बनकर अपने कैरियर की अच्छी शुरुआत कर सकतें है |

भारत सरकार के आर्कियोलॉजिकल विभाग में पुरातत्व संबंधी शोध खुदाई या प्राचीन स्मारकों के संरक्षण इत्यादि कर सकते है। टूरिस्ट गाइड बनकर करियर को नयी दिशा दे सकते है । बड़े-बड़े शिक्षण संस्थानों में आप इतिहास का स्थाई या गेस्ट लेक्चरर बन सकते है। इसके अलावा लाइब्रेरी शोध संसथान हिस्टोरिक सोसाइटीज, इंटरनेशन हिस्ट्री आर्गेनाइजेशन, नेशनल पार्क, नेशनल म्यूजियम, ऑक्शन हाउस (निलामी घर) क्यूरेटर (संग्रहालय), आर्काइव्स (पुराने दस्तावेज), प्राचीन मुद्रा संरक्षण आदि कार्यक्षेत्र में तरक्की के अवसर प्राप्त हो सकते है । सिविल सर्विस के लिए इतिहास एक महत्वपूर्ण विषय है। भारतीय पुरात्व सर्वेक्षण (A.S.I.) भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (आई.सी.एच.आर) प्रतियोगी परीक्षा जैसे शिक्षक भर्ती पी.एस.सी., आई.ए.एस., एस.आई पुलिस भर्ती आदि की तैयारी कर सकते है।

निष्कर्ष :- कहा जाता है कि वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में इतिहास विषय का शिक्षण व अध्ययन की महती आवश्यकता है। इसके उद्देश्य अत्यंत व्यापक एवं दूरगामी है । इतिहास विषय के महत्व और उपयोगिता को ध्यान में रख कर इतिहास विषय के अध्ययन पर बल देकर कार्य करना हमारा पुनीत कर्तव्य है। इतिहास का अध्ययन राष्ट्रीयता के लिए उपयुक्त होता है । मानव समाज के कल्याण के लिए विशाल इतिहास को भूलाया नही जा सकता है। क्योंकि यह भी सत्य है कि अपने इतिहास को भूलने वाले राष्ट्र का कोई भविष्य नही होता है । समस्त मानव जाति को इतिहास की सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए ।

विगत कई वर्षो से हमारे महाविद्यालय अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय महाविद्यालय पाण्डातराई में इतिहास विषय संचालित है जिसमें प्रति वर्ष छात्र / छात्राओं द्वारा प्रवेश लिया जाता है । हमारे महाविद्यालय में बी.ए. प्रथम, बी.ए. द्वितीय , बी.ए. तृतीय तीनों कक्षाओं में छात्र / छात्राएं अध्ययनरत है । महाविद्यालय में इतिहास विषय पर प्राचीन भारत का इतिहास मध्यकालीन भारत का इतिहास तथा आधुनिक भारत का इतिहास तीनों कक्षाओं में अध्यापन कार्य कराया जाता है ।

बी.ए. प्रथम	बी.ए. द्वितीय	बी.ए. तृतीय
भाग एक भारत का इतिहास (प्रारंभ से 1206 ई. तक	भाग एक भारत का इतिहास 1206 ई. से 1761 ई. तक	भाग एक भारत का इतिहास 1761 ई. से 1947 ई. तक
भाग दो विश्व का इतिहास (1453 से 1871 ई. तक	भाग दो विश्व का इतिहास 1890 ई. से 1964 ई. तक	भाग दो भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास 1857 ई. से 1947 ई. तक

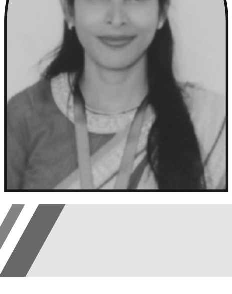

श्रीमती संगीता चंद्रवंशी
अतिथि व्याख्याता

ENGLISH DEPARTMENT

Pandatarai growing in the lap of chhattisgarh Mahtari is overwhelming everyone with its natural beauty on whose dore head the atal bihari vajpayee goverment college is a adorned like a tilak who is slowing strems of development in her area through her captivating work and he work que to which people of the entire area are getting denefited .

This college is fultilling its responsdilities Principals tasks objetives and goals.

Well as result the college has received a good great BT. and in fature too it will remain determined and provide new momentum.

The college has been runing all three facilities Since its coming into existence. which includes scince arts and commerce

English foundation subject is included as the base course in cluded in it whose main objective is it know understand this languge and speak so that it can complete the goabal journery with these objectives the english department of this callege operates and discharges its functions so that it can set a new record.

SURAJ KUMAR
GUEST LETURER
ENGLISH

पचराही माता कंकालीन दर्शन

पचराही छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा पुरा-तात्विक स्थल कबीरधाम जिला मुख्यालय से 40 कि.मी. दूर हॉफ नदी के किनारे मैकल पर्वत श्रेणी की गोद में बसा है । यहां के आदि निवासियों के अनुसार यहाँ से पाँच रास्ते निकलते हैं जो भोरमदेव (चौरागढ़) सहसपुर, रतनपुर , मंडला, लंजिका (लांजी) को जाता है इसलिए इस स्थान का नाम पचराही पड़ा ।

कई लोगों का यह भी कहना है कि यहां पर माँ कंकाली की मूर्ति एक टीले मे दबा था, जहाँ पर माँ कंकाली साक्षात् देवी स्वरुप धारण कर आया करती थी जिनके जिए यहाँ के लोग पचरा गीत गाया करते थे जिनके कारण भी इस स्थान का नाम पचराही पड़ा ।

पचराही की पहली खुदाई 2007-10 के दौरान श्री सोबरन सिंह यादव के निर्देशन एवं श्री अतुल प्रधान के नेतृत्व मे हुआ । इस उत्खनन सें पचराही के इतिहास को नई रोशनी मिली एवं इतिहास के कई कड़ियों को जोड़ने में मदद मिली । उत्खनन हेतु पचराही में 84 एकड़ भूमि चिन्हांकित किया गया था । जिसमें से अभी भी कुछ किस्सा उत्खनन हेतु शेष है। पचराही मे जिस स्थान पर खुदाई हुई है वह स्थान एक टीले के रुप मे था जिसके ऊपर ′′ माँ कंकाली′′ की प्रतिमा थी जिसके कारण यह स्थान ′′ माँ कंकालीन ′′ मंदिर के नाम से विख्यात हो गया । इसके अलावा यहाँ पर हिन्दू धर्म, जैन धर्म मूर्तियाँ एवं मंदिरों के अवशेष प्राप्त हुऐ है । जिनका निर्माण 9 वीं ईस्वी से 19 वीं ईस्वी के बीच हुआ है, जिसमें सात शिव मंदिर एवं आठ से दस तालाबों की श्रृंखला जीवन्त मौजूद है ।

खुदाई के दौरान यहां दो जलीय प्राणी के जीवाश्म मिला है जिसमें एक ′′मोलूस्का′′ (घोंघा) एवं दूसरा ′′पाइला′′ (सीपी) परिवार का है। वैज्ञानिकों का कहना है कि मोलुस्क जीवश्म का काल लगभग 13 करोड़ वर्ष पुराना है । भारत मे पहली बार खुदाई मे इन जलीय प्राणियों के जीवाश्म छत्तीसगढ़ के ′′पचराही′′ में मिले हैं।

इसी के साथ ही साथ यहां पर आदिमानव के आवास के साक्ष्य भी मिले हैं एवं उत्तर पाषाण के तथा सूक्ष्म पाषाण काल के बारीक (सूक्ष्म) औजार प्राप्त है । इसके अलावा अति-पुराना पत्थर के औजार प्राप्त हुआ है, जिसको छत्तीसगढ़ का सबसे पुराना पत्थर का औजार माना जाता है ।

पचराही परिक्षेत्र में ′′पंचायतन शैली′′ के साथ - साथ राजपुरुष, उमा महेश एवं चामुण्डा देवी की बहुत सुन्दर मूर्ति प्राप्त हुई है एवं अभी तक लगभग छः टन मंदिर के अवशेष व पुरानी ईट से बने भग्न मंदिर के अवशेष प्राप्त हुऐ है ।

यहाँ की खुदाई से सोमवंशी काल के पार्वती - कार्तिकेय पट्ट, भगवान बुद्ध, सूर्य , तारा , उमा - महेश एवं द्वार-तोरण जैसे बहुत मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। जिसमें से अनेक मूर्तियों को पचराही से दूर खैरागढ़ संग्रहालय मे संग्रहित किया गया है तथा अभिलेख युक्त मूर्तियों को वर्तमान मे बूढ़ा महादेव मंदिर कवर्धा मे एवं दो सती स्तम्भ को कवर्धा के राम मंदिर मे रखा गया है, खुदाई से प्राप्त बलुआ पत्थर के भागवान रुद्र-देव की प्रतिमा को बिलासपुर के अमेरी-कांपा तालागांव मे रखा गया है एवं पचराही संग्रहालय में भगवान रुद्र-देव की पुट्ठे की प्रतिमा को रखा गया है।

पचराही - कंकालीन मे एक दुर्लभ सिद्ध चमत्कारिक हनुमान मंदिर है जिसमें हनुमान जी एवं मां कामाख्या देवी संयुक्त रुप से प्रदर्शित है । जिसमे हनुमान जी अपने पैरो तले अहिरावण को दबाये हुए है ।

सोमवंशीयो के अलावा यहां कल्चुरी राजाओं का भी शासन हुआ करता था । 22 फरवरी 2008 को यहां की खुदाई से ''12 सोने के सिक्के'' व 25 चांदी के सिक्के प्राप्त हुए हैं। यहाँ पहली बार कल्चुरी राजा प्रतापमल देव के स्वर्ण सिक्के एवं रत्नदेव के दो स्वर्ण सिक्के प्राप्त हुए है। देव एवं पृथ्वीदेव के चाँदी की सिक्के प्राप्त हुए है ।

यहां से पहली बार ''फणीनागवंशी राजा कान्हर देव'' के सोने के सिक्के एवं श्रीधर देव व यशराज देव के चांदी के सिक्के प्राप्त हुए हैं। तथा मुगल कालीन सोने के सिक्के एक दर्जन से भी अधिक प्राप्त हुऐ है ।

पचराही 11 वीं - 12 वीं ईस्वी मे शिल्प वास्तुकला, सांस्कृतिक एवं व्यापार का बहुत बड़ा केन्द्र हुआ करता था। यहाँ आम और खास दोने तरह के लोग रहते थे, जिनके दैनिक जीवन मे उपयोग की जाने वाली वस्तुएँ खुदाई से प्राप्त हुई है जैसे - खिलौना, मिट्टी के बर्तन, गहना, ताला, लोहा, औजार, खंजर, हथकड़ी, अंगुठी, मृण्मय, आभूषण, ताम्रपत्र, पत्थर की चक्की इत्यादि, जिसे पचराही संग्रहालय मे संग्रहित किया गया है ।

हाफ नही दूसरे किनारे पर बकेला गांव स्थित है जो जैन धर्म का तीर्थ स्थल है । नदी किनारे स्थित एक टीले की खुदाई पर जैन तीर्थकरों - धर्मनाथ, शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी की मूर्तियाँ प्राप्त हुई है। जो कि वर्तमान में ''काले हीरे'' से बना भागवान पार्श्वनाथ जी की प्रतिमा स्थापित है तथा बकेला मे ही जैन ट्रस्ट द्वारा संगमरमर पत्थर की विशाल भव्य मंदिर का निर्माण किया जा रहा है जों भविष्य मे कबीरधाम जिला का सबसे बड़ा जैन तीर्थ एवं मंदिर होगा ।

पचराही के सांस्कृतिक तिथि क्रम

1.	प्रथम काल -	(A)	उत्तर पाषाण काल
		(B)	सूक्ष्म पाषाण काल माइक्रोलिथिक
2.	द्वितीय काल -		गुप्तोत्तर काल (सोमवंशी)
3.	तृतीय काल -		कल्चुरी वंश
4.	चतुर्भ काल -		फणिनाग वंश
5.	पंचम काल -		इस्लामिक

संगीता चन्द्रवंशी
अतिथि व्याख्यता
इतिहास

समाज

समाज का तात्पर्य प्रायः मानव समूह या बसावट को कहते है। आदिकाल में जब मानव समूह में नही रहता था तब जीवन यापन करने के लिए उन्हें समूह में रहने की आवश्यकता पड़ी तो मानव एक दूसरे से व्यवहारिक दृष्टि से जुड़ने लगे। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आपस में मिलकर रहना प्रारम्भ किया, जिसमें कार्य, रीति - रिवाज, परम्पराएँ संबंधों नातेदारी, परिवार का निर्माण हुआ इसी को समाज कहा जाता है ।

सामाजिक एकता लक्ष्य हो

जीवन का हमारा एक सत्य है , सामाजिक एकता हमारा लक्ष्य है।
आओ मिलकर करे ये अगाज, सामाजिक एकता का सफल हो आवाज।
न टुटेंगे न बँटेंगे ये हमने ठाना है, दूर करेंगे सामाजिक बुराईयों को ये हमने माना है।
समाज में फैला जातिवाद का दंश है, समाज से मिटाना भेदभाव का अंश है।
सामाजिक एकता हमारा लक्ष्य है
नातेदारी विवाह, धर्म, मनोरंजन सम्बन्ध है परिवारों का जागरुक करेंगे सबको, वसुधैव कुटुम्बकम् विचारों का
समाज में रिश्ते - नातों का एक जाल है, समाज में ऊँच नीच का एक काल है।
शिक्षा का स्तर ऊँचा कर नवीन ज्ञानों का समाज से दूर हो समस्या अभिमानों का
जाति-पाति भेद-भाव का अभाव हो प्रगति में रहे समाज ये सभी का भाव हो
सामाजिक एकता हमारा लक्ष्य हो।

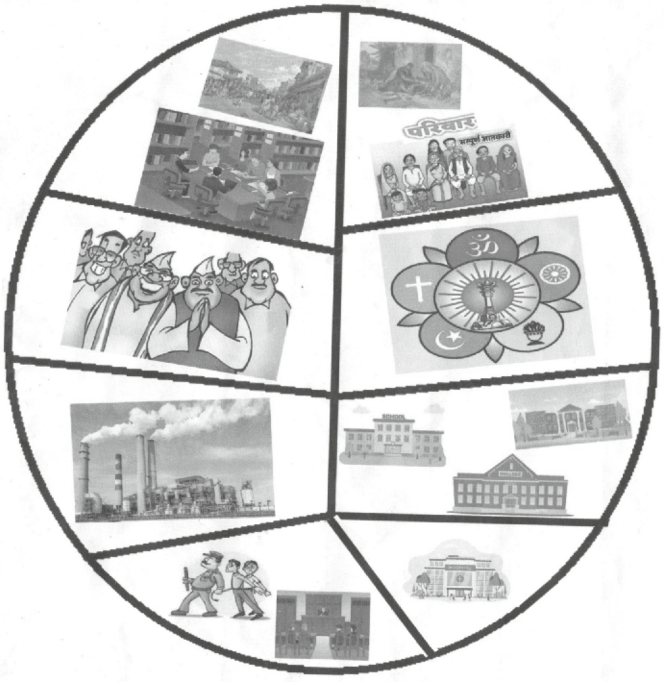

वसुधैव कुटुम्बकम्

धनंजय कर्ष
अतिथि व्याख्याता
समाजशास्त्र

स्वस्थ समाज

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है । अगर हमारे युवा मानव संसाधन रुग्ण रहेगें कुपोषित रहेगे तो दुनियाँ की अपेक्षाओं पर कैसे खरे उतरेंगें ? आज हर परिवार अपनी बचत का एक बड़ा हिस्सा इन गैर जरुरी बीमारियों के इलाज पर खर्च कर देता है। मानसिक और शरीरिक श्रम और परिवार को होने वाली व्यथा का मूल्यांकन ही नही किया जा सकता है लिहाजा समाज को स्वस्थ रखना होगा। इसके लिए सरकार से लेकर समाज तक सभी को जागना होगा। भारत जैसे देश के लिए यह मसला किसी विड़बना से कम नही है। एक तरफ तो हम तरक्की की सीढ़ियाँ तेजी से चढ़ते जा रहे हैं, लेकिन अपने मानव संसाधनों को स्वस्थ सुविधाएँ मुहैया कराने के मामले में दुनिया के कई छोटे देशो से पीछे हैं। इस नाकामी की हमें बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही है। रोकी जा सकने वाली बीमारियों और समय से पहले होने वाली मौतों के चलते हर साल हमें अपने सकल घरेलू उत्पाद के छह फीसद की चपत लगती है। इस हालात की मुख्य वजह स्वास्थ्य क्षेत्र में बहुत कम निवेश का होना है। जन स्वास्थ्य नीति कभी सरकार की प्राथमिकता में नही रही। आज भी स्वास्थ्य के मद में सरकारी और निजी समेत कुल खर्च जीडीपी का करीब चार फीसद है। स्वच्छता को लेकर जो तेजी अब दिखाई दे रही है वही अगर पहले दिखाई देती तो अब तक उसका फायदा परिलक्षित होने लगता । शारीरिक रुप से स्वस्थ व्यक्ति की सोच भी स्वस्थ होती है। ऐसे लोग न केवल सकारात्मक सोचते हैं, बल्कि विनाश युक्त और अपराध जैसी बातें भी इनकी जेहन में कम ही आती है। यह प्रवृत्ति समाज के लिए किसी वरदान से कम नही होगी जब समाज में बुराई और बुरे लोग कम संख्या में होंगे तो उन्हे आसानी से हतोत्साहित किया जा सकेगा। ऐसे में स्वस्थ समाज के मायने और उसे पाने की पड़ताल आज हम सबके लिए बड़ा मुद्दा है।

आत्महत्या

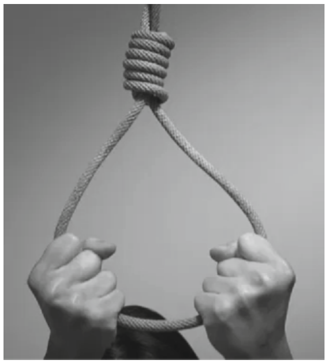

आज समाज में महामारी की तरह बढ़ रही आत्म हत्या समाज के आने वाले समय में निराशा फैलाने वाली कार्य कर रही है। आत्महत्या जिसका अर्थ है ''स्वयं'' को मारना जानबुझ कर अपनी मृत्यु का कारण बनने के लिए कार्य करना है । दुर्खीम के अनुसार आत्महत्या व्यक्तिगत ना होकर सामाजिक क्रिया है।

आत्महत्या अक्सर निराशा के चलते की जाती है, जिसके लिए अवसाद द्विध्रुवीय विकार मनोभाजन, शराब की लत या मादक दवाओं का सेवन जैसे मानसिक विकारों को जिम्मेदार ठहराया जाता है। तनाव के कारक जैसे वित्तीय कठिनाइयाँ या पारस्परिक संबंधों में परेशानियों की भी अक्सर एक भूमिका होती है।

आत्महत्या को रोकने के प्रयासों में आग्नेयास्त्रों तक पहुँच को सीमित करना, मानसिक बीमारी का उपचार करना तथा नशीली दवाओं के उपयोग को रोकना तथा आर्थिक विकास को बेहतर करना चाहिए। अपने मन में अधिक बातों को नही रखनी चाहिए अच्छा महौल, अच्छे भोजन, नियमित व्यायाम अच्छे संबंध मनोरजंनात्मक कार्य।

सीमा चन्द्रवंशी
अतिथि व्याख्यता
समाजशास्त्र

जीने की आस

खामोशी से पलक देखूँ, तन्हाई में झलक देखूँ,
मंजिल मे और लम्हा आये न आये,
मै हर रोज सपना सजाता हूँ
मै हर रोज सपना सजाता हूँ.......... 2
कहीं टूटती डाली नजर आती है,
कही बिखरती फुल नजर आता हैं,
फिर भी आश लगाये बैठे रहता हूँ,
मै हर रोज सपना सजाता हूँ 2
बिजलीयाँ दिल झंझोर कर चमकती हैं,
बारिस पलकों पर से गुजरती हैं,
फिर भी उजाला ढूढ़ा करता हूँ,
मै हर रोज सपना सजाता हूँ 2
अंगारे मचलने लगा हैं,
शोले दहकने लगा हैं,
फिर भी पग पसराये रहता हूँ,
मै हर रोज सपना सजाता हूँ 2
समन्दर उफनने लगा है,
नदियाँ मचलने लगी है,
फिर भी लगने की पार कोशिश करता हूँ,
मै हर रोज सपना सजाता हुँ 2

सूरज कुमार
अतिथि व्याख्यता
अंग्रेजी

आज का दौर

आज के दौर मे दुनियाँ बदलती जा रही है । बढ़ती हुई महँगाई और बेरोजगारी आज के दौर की सबसे बड़ी समस्या है । जिस समस्या से गरीब परिवार जुझ रहा है । आज के दौर में सभी अपने - अपने मतलब के जिए कार्य कर रहे है । आज के दौर मे किसी को किसी की फिक्र नही है । आज के दौर मे भाई-भाई पर विश्वास नही करता है । क्योंकि आज के दौर मे सभी लोग अपनी इंसानियत को भूलते जा रहे है । लोग मोह माया के जाल मे फंस कर इंसानियत भूल रहे है । आज के दौर मे कई बदलाव पूरी दुनियाँ मे देखने को मिले है । आज के दौर मे कुछ बच्चे अपने माता - पिता के अपमान करने से भी नही घबराते है आज के दौर मे शिक्षा का विकास हुआ है, हर इंसान टेक्नोलॉजी से जुड़ गया है । आज के दौर मे हर काम ऑफिस से लेकर खेती तक मशीनों द्वारा किया जाता है । आज के दौर मे व्यक्ति की आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही है । लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण बेरोजगारी की समस्या सामने आ रही है । जिसका निराकरण करना बहुत जरुरी है । आज के दौर मे शिक्षा को बड़ा महत्व दिया जा रहा है । आज के दौर मे देश के विकास के लिए देश के युवाओं को शिक्षित करना जरुरी है ।

माया चन्द्रवंशी
कक्षा - बी.ए. द्वितीय वर्ष

एक विद्यार्थी का जीवन.....

विद्यार्थी के जीवन का लक्ष्य होता है कुछ
प्राप्त करना जिसमें उसका सबसे परम मित्र वह स्वयं
व उसका अकेलापन होता है, उसका अकेलापन ही
उसे खुद से मिलवाता है ।

उसके लिए हर सुबह हौसले की तरह होती है
सूरज की रोशनी के साथ और शाम का
सूरज उसके लिए उम्मीद भरा होता है कि फिर
नयी सुबह होगी ।

इस सफर मे सबसे अहम् किरदार
विश्वास का होता है,
अगर उसे खुद पे विश्वास है
तो एक न एक दिन अपनी
किस्मत वह स्वयं निर्मित करेगा ।।

'' शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिससे आप अपनी दुनिया को बदलने के लिए उपयोग कर सकते है''

धनेश कुमार
बी.ए. तृतीय वर्ष

बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ

जब उन्हे बचाएगें और पढ़ाएँगें
तभी हम विश्वगुरु बन पाएँगें

माँ नही होगी तो बेटी नहीं होगी
बेटी नही होगी तो बेटा नही होगा ।

कैसे खाओगे उनके हाथ की रोटियाँ
जब पैदा ही नही होने दोगे बेटियाँ ।
लड़का पढ़े तो अकेला बढ़े
लड़की पढ़े तो दो परिवार आगे बढ़े ।

सीख - बेटी बेटा में भेदभाव नहीं करना चाहिए ।

सुमन चन्द्रवंशी
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

बचपन की जिंदगी

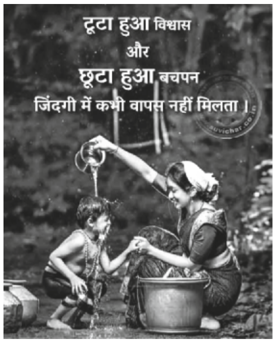

वो बचपन भी कितना सुहाना था,
जिसका रोज एक नया फसाना था ।

कभी पापा के कंधो का,
तो कभी मां के आंचल का सहारा था ।

कभी बेफिक्र मिट्टी के खेल का,
तो कभी दोस्तों का साथ मस्ताना था ।

कभी नंगे पाँव वो दौड़ का,
तो कभी पतंग ना पकड़ पाने का पछतावा था ।

कभी बिन आँसू रोने का,
तो कभी बात मनवाने का बहाना था ।

सच कहूँ तो वो दिन ही हसीन थे,
ना कुछ छिपाना और दिल में जो आया बताना था।

मिनाक्षी पटेल
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

मेरी प्रेरणा

माता-पिता का कर्ज चुकाना दुनिया में सभी कर्मो से बहुत बड़ा होता है | जिसे किसी भी कीमत में चुकाया नही जा सकता है | माता-पिता हमेशा चाहते है कि उनका बच्चा किसी गलत रास्ते पे ना जाए और हमेशा जिम्मेदारियों कों समझे | धरती पे भगवान के रुप में माता पिता ही हैं जो हमें प्यार करते है | और हमेशा हमारी परेशानियों को हल करने में सहायता करते हैं |

जिसके पास माता - पिता होते है | उसके पास दुनिया की सबसे बड़ी ताकत होती है | पिता से ही नाम है पहचान है | माता-पिता एक वो अनमोल रत्न है | जिनके आशीर्वाद सें दुनियाँ की सबसे बड़ी कामयाबी भी हासिल की जा सकती है |

माता - पिता ही है जो हमें सच्चे दिल से प्यार करते हैं | पिता हमें पढ़ाते है. लिखाते हैं | एक कामयाब इंसान बनाते हैं | जब बच्चों को कामयाबी हासिल होती है | चाहे वों कितनी बड़ी हो या चाहे कितनी छोटी हो माता-पिता को लगता है कि कामयाबी उन्हें मिली है

भगवान के रुप में माता-पिता हमारे लिए एक सौगात है | जिनकी हमें सेवा करनी चाहिए और कभी उनका दिल नही तोड़ना चाहिए माता-पिता को हमेशा ही खुशी देना चाहिए उनसे ही दुनिया है और दुनिया में हमारा अस्तित्व है |

''हे भगवान'' बस इतना काबिल बनाना मुझें कि जिस तरह मेरे माता - पिता ने मुझे खुश रखा मैं भी उन्हे बुढ़ापे में खुश रख सकूँ |

पिंकी साहू
बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष

बचपन की यादें

वो गुजरें जमाने याद आते हैं, वो टूटे खिलौने याद आते हैं।
नानी के हाथ के स्वेटर याद आते हैं, पापा के दिये हुए चार आने याद आते हैं।
वो खेत खलिहान याद आते हैं, वो माँ के हाथ के पकवान याद आते है।
लालटेन की रोशनी में पढ़ना याद आता है, होमवर्क में लगें लाल निशान याद आते है।

वो घर में जरुरी काम आने का निवेदन याद आता है
वो पैर छूकर शिक्षक और बडो का अभिवादन याद आता है |

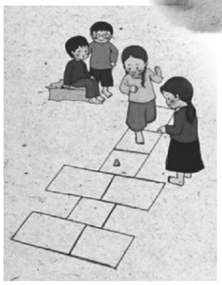

शाला के वार्षिकोत्सव का गायन वादन याद आता है |
कक्षा शुरु होने से पहले सरस्वती जी का वंदन याद आता है |

राजेश्वरी चन्द्रवंशी
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

नारी पर अत्याचार

जब एक लड़की किसी लड़के के साथ शादी कर के अपने ससुराल मे जाती है, तो वह वहाँ पर सभी से प्यार की उम्मीद करती है । परंतु कभी - कभी उसकी इन उम्मीदों पर पानी फिर जाता है । क्योकि उसके ससुराल वाले विभिन्न कारणों से उसके ऊपर अत्याचार करना शुरु कर देते है । हालांकि कभी - कभी लड़कियो पर उनके खुद के घर मे भी अत्याचार होते है । परंतु खासतौर पर लड़कियों को शादी के बाद अनेक प्रकार के प्रतिबंध झेलने पड़ते है । कई बार दहेज कम लाने के कारण लड़कियों को उनके ससुराल वालों के द्वारा तंग किया जाता है और मारा - पीटा जाता है । इसके अलावा उन्हे तरह - तरह की यातनाएँ भी दी जाती हैं । कई बार तो दहेज की माँग पूरी ना होने पर नारी को जान से भी मार दिया जाता है, हालाकि सरकार ने नारी सुरक्षा के लिए कई कानून बनाए हैं परंतु फिर भी अपराध करने वालों को कानून का डर भी नही होता है और वह नारी को बंधुआ मजदूर की तरह परेशान करते है और हर प्रकार से उसका शोषण करते है ।

हर व्यक्ति को यह समझना चाहिये कि नारी भी एक इंसान है, इसलिए उसका सम्मान करना चाहिये । फिर चाहे वह अपने घर की नारी हो या फिर दूसरे किसी घर की नारी हो । मेरे शब्दो मे पुरुष प्रधान समाज को अब जागने और जगाने का वक्त है, साथ ही महिलाओ को अपनी शक्ति का एहसास करवाने और उन्हे अपनी खोई हुई शक्ति वापिस दिलाने का समय आ गया है । नारियाँ जीवन देना जानती हैं तो वे लेना भी जानती है । सती सावित्री का प्रसंग उल्लेखनीय है जिन्होंने अपने सत्य एवं पतित्व के बल पर अपने पति के प्राणों को भी यमराज से छुड़ा लिया था । इन अत्याचारों को रोकने के लिए समाज को भी कुछ कदम उठाने चाहिए । आजकल की अश्लील फिल्मों तथा सोशल मीडिया पर इस तरह के कंटेट को रोकने की आवश्यकता है जिसका सीधा नकारात्मक प्रभाव आने वाली पीढ़ियों पर पड़ता है । यदि बेहद अश्लील ढंग से टीवी पर विज्ञापन नित्य बच्चो को दिखाया जाएगा, उन्हे क्राइम की फिल्में ही यू दिखाई जाती रही तो एक दिन वह अपराध के खौफ से मुक्त हो जाएगा तथा उसे किसी का कत्ल करने में भी कोई हिचकिचाहट नही होगी क्योकि इसकी मानसिक प्रशिक्षण तो उसे बचपन से ही घर बैठे टीवी पर मिल रही थी । क्या आज हम अपने आधुनिक समाज मे केवल पुरुषों को ही रखना चाहतें है यदि नही तों फिर महिलाओं के साथ अत्याचार क्यों । हमारी माँ बहिन, पत्नी, भाभी वो भी तो एक महिला है ।

रोकने के उपाय

हमें लगता है युवा पीढ़ी को महिलाओं के प्रति अपनी सोच को बदलने की आवश्यकता है, भले ही हमारी पौराणिक उक्ति सत्य ना हो मगर औधे मुहँ तो ना गिरे । जहां नारियों का सम्मान किया जाता है वहाँ इन्सान बसते है यह उक्ति आज समय में सही प्रतीत होती है तथा हमें इसी को चरितार्थ करने का प्रयत्न करना चाहिये । सरकार को भी नारी अत्याचार को अंजाम देने वाले मनचलों के लिए विशेष कानूनों तथा कठोर सजा का प्रावधान किया जाना चाहिये । कई बार आँखे शर्म से झुक जाती है जब कि 5-7 साल की बच्ची के साथ बलात्कार गैंगरेप जैसी घटना सुनते हैं । असल में लोगों की सोच में ही अपराध बसा हुआ है । आप किसी सामान्य 10 इंसानो से पूछ लीजियें नारी पर अत्याचारों का कारण क्या है, संभव है आपको अधिकतर कारण ये गिनाएगें कि उन्हें जींस नही पहननी चाहिए, अकेले नही जाना चाहिए रात को घर से बाहर नही निकलना चाहिए । गौर करें तो यही कारण है नारी अत्यचार के तो फिर हमारे समाज और जंगल में फर्क क्या रह जाता है । पर्यटकों को भी यह ही सलाह दी जाती है कि अकेले न जाए, रात को न जाए फिर क्या मतलब है कानून का समाज का व्यवस्था का । लड़कियाँ एवं महिलाएँ भी समाज की मुख्य कड़ी है । बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं अभियान के जरिये भारत सरकार निरंतर बालिकाओं को जन्म देने तथा उन्हे शिक्षित करने के लिए प्रेरित कर रही है । अन्यथा यही हाल रहा तो वे दिन भी आ जाएगे जब कोई माँ अपनी कोख से बेटी को जन्म नही देना चाहेगी ।

माया चन्द्रवंशी
बी.ए. द्वितीय वर्ष

कर्म से बदलती है किस्मत

मनुष्य को अपनी किस्मत को नही कर्म को दोष देना चाहिए, क्योंकि कर्म प्रधान होता है। मनुष्य जैसा कर्म करेगा उसके अनुसार भाग्य का निर्माण होगा। ऐसा कहा जाता है कि भगवान पहले से ही मनुष्य के किस्मत को निर्धारित कर भेजता है। लेकिन सत्य तो यह है कि मनुष्य के कर्म के अनुसार ही किस्मत बनती जाती है। लोग किस्मत को दोष देते है कि किस्मत खराब है, लेकिन उनको ये नही पता रहता है कि अपने जीवन में कैसे कर्म किया है। आप अच्छे कर्म करो या बुरे उनके अनुसार ही आपकी किस्मत बनती है। इन्सान जब दुःखी होता है या किसी भी प्रकार का कष्ट होता है तो अपनी किस्मत को कोसते रहता है, लेकिन यह बहुत गलत है। किसी का बुरा करते समय लोग यह नही सोचते है कि इसका परिणाम हमारे स्वयं के जीवन में आयेगा और जब आता है तो यह कहते है कि हमारी तो किस्मत ही खराब है, लेकिन वास्तव में किस्मत खराब नहीं होती वो तो कर्म पर निर्भर होती है। कहा जाता है कि जैसा कर्म करोगे वैसा फल मिलेगा / जो पूर्णतः सत्य है ।

प्रतिमा चन्द्रवंशी
एम.ए. प्रथम सेमे.
हिन्दी साहित्य

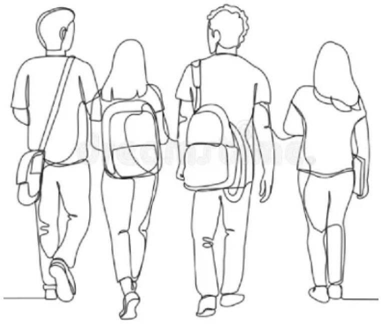

कॉलेज का पहला दिन

कॉलेज का पहला दिन बिछड़ गए यार पुराने मिले कुछ यार नए... सब कुछ नया था क्योंकि वो कॉलेज का पहला दिन था। शिक्षा की नयी दुनियाँ थी गुरुओं का नया समा था घबराहट थी सीनें मे एक अजीब सा डर था । क्योंकि वो कॉलेज का पहला दिन था। दिन गुजरने लगा घबराहट खत्म होने लगी। कुछ दोस्त कुछ गुरु मिले पुराने जैसे हम भी घुलने लगे माहौल में अब समझ आया वो डर क्योंकि वो कॉलेज का पहला दिन था। नए कॉलेज के मित्रों और गुरुओं को समर्पित

नेहा साहू
एम.ए. तृतीय सेमेस्ट हिन्दी

किताब और मनुष्य

किताब हमारे जीवन की वह भाषा है जिसे हम सरल शब्द उसके भाव को ग्रहण करते है किताबे हमे यह सीखाते है | कि वह हमारे जीवन की प्रकार से मार्ग दर्शन करता है | किताबे हमारी दोस्त है क्योकि हम जब किताब की अपने दोस्त से मन लगाकर पढ़ते है | तब बड़े - बड़े प्रश्न का उत्तर दिया जा सकता है | किताबें हमे हमारे जीवन की लक्ष्य को निर्धारित करता है यह हमे यह सीखी की जिम प्रकार किताब मनुष्य द्वारा लिखा पढ़ा जा सकता ह | क्योंकि किताबों की एक मनुष्य ही उसे पढ़कर अपने जीवन का निर्धारण करता है | क्योंकि ये किताब ही है जिससे सही फेसला लेता है यह किताब मनुष्य को सही मार्ग का निर्धारण करता है | लेकिन मनुष्य इसको गलत उपयोग भी करते जिस प्रकार एक स्कूल मे पढ़ने वाला बच्चा सही गलत का निर्धारण सही - तरीकों से कर लेता है उसी प्रकार जो किताबें का या किताबें पढ़ने बच्चो का भी भाव उसका आत्मनिर्भर भी सही रहता है क्योंकि यह किताबों से मनुष्यों का मूल्य है मनुष्य ने किताबे पढ़कर एक जिम्मेदार इंशान बन गया है | लकिन किताबों का कदर वही मनुष्य समझ सकता है जो मनुष्य किताबो मे छुपी इसकी भावनाओं को समझ सकता है लेकिन मनुष्य मे यह गुण पढ़ाई करते तक ही रहता है मनुष्य यह भूल जाता है कि वह जिस किताब ने पढ़ना सीखाया है | जिसके या जिसने जीवन का फैसला लेना सीखा है उसी किताबों को भूल जाते है | लेकिन जिस किताब ने अपनों की तरह मनुष्य का साथ देते है मनुष्य उसी किताबों को भूल जाते है | किताबे यह भी कहती है जिस प्रकार एक मनुष्य ही किताबों का भाव समझकर किताबों मे अनेक प्रकार के वेद पुरान और ग्रंथ लिखे है | उसी किताबों का भाव नही समझ मनुष्य किताबों के रहते ही हम पढ़ लिखकर अच्छी नौकरी पाते है | लेकिन नौकरी मिलते है या नौकरी लगते ही उस किताब को भाषा या एक किताब है कहकर उसे फेक देते या बेच देते है | लेकिन मनुष्य ये किताबों ने हमे हमारे माँ बाप के तरह सही मार्ग दिखाया है एसे हम भूल जाते है किताबे बोल नही सकती लेकिन ना बोलकर भी मनुष्य की बहुत सिखा देती है मनुष्य को अपने बड़े होने का घमंड रहता है | लेकिन यह भूल जाता है जिस किताब ने बडा इंसान बनाया है वह किताब कभी भी घमंड नही करती है |

किताबों में इतना भाव रहता की वह मनुष्य भी किताबों मे मनुष्य अपने भावो को लिखता है | वह किताबों हमे भावों को भविष्य की भावनाओं को सीखता है | किताब वह भावना है | जिस प्रकार मनुष्य को किताब पढ़ने के बाद के या पढ़ने के बाद किताबों को भूल जाते है | वही मनुष्य अपनों को भूल जाते है अपनों से काम निकलने के बाद जिस प्रकार बडे या बुढ़े माँ बाप बच्चो का शादी करते है | उसी प्रकार बच्चो के शादी होने के बाद बहु आती है |
तो मनुष्य अपने माँ बाप को भूल जाते है | यह किताबों का छोटा सा भाव है |

रमा चन्द्रवंशी
एम.ए. प्रथम सेमे.
हिन्दी साहित्य

चिंतन

ये झुर्रियाँ चिंताओं की खामोश बता रही है सीधे - सादे इंसान को उलझन में डाल रही है कोशिश है कैसे भी किसी एक को मिटा दिया जाए | बदले में एक चार और मुसीबतों को ला रही है | बावरा मे मन यूं ही उदास बैठा है सोच में किस बहुत गहरा डुबा है नही कोई जो एक राह दिखा सके सपनों को मेरी मंजिल से मिला सके | आशाओं के बीच मे निराशा फैसी मरुस्थल में पानी की एक बूंद जैसी है प्रकाश फिर भी अंधेरा छाया हुआ है जीवन की मात्रा में कुछ तो छुटा हुआ है | दर्पण भी ये जो प्रतिबिंब दिखा रहा है उसे मन खुद पहचानने से मना कर रहा है | चल रही है कोशिश इसे खूबसूरत संवार लूँ डुबते हुए साए को दरिया से भी पार करा लूं |

चाहती है लहरें भावनाओं के तुफाँ में किश्ती भटक जाए | जो चाहता है मन वो बहुत दूर कहीं चला जाए | संकीर्ण राहों मे यूं ही पागलों की तरह फिरता रहूँ | बाहर आने को इन राहों में राह ढूंढता फिरुँ |

माया के रुपो के इन चक्करों में आ चुका हूँ | जिंदगी की बेड़ियो में अब तो फँस गया हूँ | नही रख सकता दूर इन भावनाओं से अपने आपको

जय महिलांगे
बी.ए. तृतीय वर्ष

कविता

1. सुन मानुष हम बस एक पेड़ है
   लेकिन तुम्हारे जीवन की डोर है |
   सारे जग की अगुवाई मे हम क्यों है खोना
   हमे नही लोभ महलो का हमारे हिस्से मे है छोटा सा कोना
2. हमें न काटों हमे न मारो हमसे क्या है बैर ?
   तुमको है हमारे जीवन का हर कण समर्पित
   क्यों नही इसका मोल चुकाता है
3. नदी पहाड़ जंगल व सारे जग ने हमसे ही खूबशुरती पासे हैं
   हमारे ही फल फूल जड़ी बूटियों से मानव अपना जीवन संवारते हैं....
4. फूलों ने अजब से महक फैलाई, तितली, भंवरों को खीच लाई
   हम पेड़ों को भी दर्द होता है |
5. हमे आशा है तुमसे यह कि हमको कम अपनाओगे | सारे जग को जीवन का
   पाठ पढ़ाओगे |

आरती निर्मलकर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

बड़ा बनना है तो सिर्फ एक शब्द याद रखें

मेरे प्यारे मित्रों दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण शब्द कौन - सा है जो आपको किसी भी क्षेत्र में शिखर पर ले जा सकता है। चाहे आपको व्यवसाय समाज सेवा या अन्य लक्ष्य तक पहुंचना हो, सिर्फ एक ही शब्द ऐसा है जो आपको हर मंजिल के करीब ले जा सकता है वह शब्द जो दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण लेकिन वह शब्द जिसकी कभी - कभी कमी भी महसूस होती है में वो शब्द है कन्सिसटेन्सी अनवरत चलना लगातार करना। मित्रों जीवन एक ऐसी यात्रा है, आप कोई भी लक्ष्य बनाये, किसी भी क्षेत्र का बनाये वह आपकी यात्रा है। अब उस यात्रा में आप कई बार सफल होंगे और कई बार असफलता का मुंह भी देखना पड़ेगा। मै आपसे सिर्फ एक बात पूछना चाहता हूँ। आप कितना भी असफल हो सफल हो कितनी बार भी खुशी का क्षण आये, कितने भी दुःख के क्षण आये। आप अपने आप से वादा करिये कि मै रुकूँगा नही। बल्कि जो भी हो रहा है उनका हिस्सा बनते रहिये। कही कोई समस्या नही है। जब कही खुशी के क्षण आये यात्रा सफल हो जाये छोटी मोटी उपलब्धि प्राप्त हो खुशी मनाओं। खुशियाँ बाटों खुद को गिफ्ट दो अपने निकट जनो प्रिय जनो को गिफ्ट दो। कुछ हासिल हो गई उसी को सब कुछ मानकर रुक जायेंगे तो ज्यादा दिन तक उस कम्फर्ट जोन में रह जायेगें तो खत्म हो जायेंगे। आप आगे बढ़ जाईये। उसी तरीके से दुःख आयेंगे तो खूब आँसू बहायें लेकिन रुकिये मत। दुख आयेंगे समस्या आयेंगी कई बार मन के अनुसार होगी कई बार नहीं होगी। मन की होगी लो आप खुशी बनायेगे लेकिन मन नही हुई तो आप दुःखी हो जायेंगे । आप इस इमोशन को स्वीकार कर लो आनंद लो। और आगे बढ़ते रहो। चलते रहना ही जिन्दगी है रुक जाना मौत। चलते रहेंगे तो एक ना एक दिन कैसे न कैसे कछुएं और खरगोश की कहानी की तरह अपनी मंजिल तक पहुँच ही जायेंगे। बस चलते रहिये। जीवन में कितनी भी तकलीफे आये कितना भी दुःख आये लेकिन आप संयम को मत खोईये। एक ना एक दिन आपको अपनी मंजिल जरुर मिलेंगी। केवल आप अपने कर्म पर पूर्ण विश्वास रखें ।

'' अगर मेहनत सच्ची और नियत अच्छी हो तो कामयाबी जरुर मिलती है ।''

ओंकार साहू
बी.ए. तृतीय वर्ष

विद्यार्थी और आत्महत्या

वर्तमान समय मे देखें तो विद्यार्थी बहुत डिप्रेशन का शिकार होते जा रहे है। उनके आत्महत्या के कई केस (घटना) सामने आ रहे है। मेरा सवाल है ऐसा क्यों हो रहा है ? क्या विद्यार्थीयों की जान इतनी सस्ती हो गई ? साल 2008 की बात करे तो 365 दिन मे 9474 छात्र-छात्राओं ने आत्महत्या थी। उसके बाद यह संख्या कम नही हुई बल्कि बढ़ती जा रही है । पिछले साल भी देश में करीब 10 हजार विद्यार्थीयों ने असहनीय दबाव और डिप्रेशन (तनाव) के चलते दुनिया को अलविदा कह दिया। अगर सफल नही हुए तो मित्र मंडली हसेंगे, अभिभावक चिल्लाऐगें और शिक्षको से निगाहे कैसे मिलायेंगे पूछने पर क्या जवाब देगें, कैरियर तो बीच मे रह गया । इस बात से पैदा होने वाला तनाव (NCRB) के अनुसार रोजाना 26 विद्यार्थीयों की जान ले रहा है । भारत मे हर घंटे मे एक विद्यार्थी जान दे रहा है। ''16 से 21 वर्ष वाले विद्यार्थी ज्यादा दबाव में'' विभिन्न तरह के शोध और मनोचिकित्सकों (PSYCHITRIST.) की माने तो विद्यार्थी को 3 तरह का दबाव होता है जो उन्हे आत्महत्या के लिए मजबूर करता है -

1. पालकों का दबाव - विद्यार्थी पालक के दबाव मे अरुचिकर विषय का चयन कर लेते है क्योंकि उस विषय मे नौकरी ज्यादा है। या बाहर नही जा सकते। आय की व्यवस्था तो भाई के लिए करना है आदि ।

2. शिक्षकों का भेद भाव - कुछ जगहों पर आज की भी ऊंच-नीच की भावना है तो कुछ शिक्षक उन्ही विद्यार्थी को विशेष मानते है जो अच्छे अंक लाते है, जबकि प्रत्येक बच्चों मे अलग-अलग क्षेत्र मे अपनी खूबी होती है । होशियार बच्चे तो आगे बढ़ ही जाते है। शिक्षक वही जो कमजोर बच्चे को मंजिल की ओर नई दिशा दे ।

3. मैनेजमेट की भ्रष्टाचारी - बहुत सारे विद्यार्थी नौकरी पाने तक पहुच जाते हैं, मगर नौकरी नही मिलती क्योंकि उनके पास घूस के लिए रुपये नही होते या फिर ऊपर तक की पहुंच नही होती। वर्तमान मे **PSC, UPSC** और **B.ED, D.ED** आदि प्रतियोगी परीक्षा मे काला बाजारी हो रही है । नेताओं और अधिकारियों के परिचितों का चयन हो रहा है एक ही परीक्षा मे एक साथ उनके पुत्र-पुत्री भाई-बहु और पत्नी आदि का चयन हो रहा हैं और जो दिन रात गरीबी से जुझकर मेहनत करते है उनकों बाहर कर दिया जाता है ।'' ऐसे मे देश मे बेराजगारी नही बढ़ेगी और विद्यार्थी आत्महत्या नही करेगा क्या ?

NCRB के अनुसार - सन् 2020 में 12526 केस
सन् 2021 में 13526 केस
सन् 2022 मे 13783 केस
सन् 2023 मे 9787 केस छात्र आत्महत्या के दर्ज किये गये है।

उद्देश्य -: मेरे विद्यार्थी साथी आत्महत्या समस्या का हल नही ।
भटकने से अच्छा है कि थोड़ा रुको समझो और फिर चलो ।
मार्कशीट एक कागज का टुकड़ा है और आप जिगर के टुकड़े हो ।

नित्या कार्निक
एम.एस-सी. प्रथम वर्ष

आज कल माता - पिता की तकलीफ

आज कल के बच्चे माता-पिता की तकलीफ को नही समझते है जो माता-पिता अपने बच्चों को अपने पैरो पर खड़ा कर देते है वो वृद्ध हो जाने के बाद अपने माता - पिता की जरुरत का सामान खरीदने से लेकर इलाज और खाने व कपड़े की जरुरत तक को पूरी नही करते है। अपने माता-पिता के वृद्ध हो जाने पर काम न करने पर बच्चे अपने माता-पिता को बोझ समझते है। अपने माता-पिता को घर से निकालकर वृद्धाश्रम में डाल देते है वे और अपनी जिन्दगी में खुश रहने लगते है ।

लेकिन उनके माता-पिता द्वारा किये गये सभी कार्य और उनके प्रेम करुणा और सुख व दुःख को नहीं समझ पाते है या नही समझते है उनके माता-पिता अपने बच्चे को जन्म देने के बाद उन्हें बैठना और बोलना व चलना सिखाते है, उसे बड़ा करते है अपने बच्चे को अच्छी शिक्षा दिलाते है कई दिन भूख रहकर अपने बच्चे को अच्छाा खाना खिलाते है, उन्हे एक अच्छी नौकरी व अच्छा पद दिलाते है। लेकिन उनके बच्चे ये सब समझते नही है अपने माता-पिता को बोझ समझकर निकाल देते है घर से। ऐसे बच्चों को तो डूब मरना चाहिए जो अपने माता-पिता को बोझ और भार समझकर वृद्धाश्रम में डाल देते है ऐसे बच्चों की जरुरत ही नहीं है इस दुनियाँ में।

सभी बच्चों को अपने दातित्व को निभाना चाहिए जिन माता-पिता ने उन्हे अपने पैरो पर खड़ा किया है, उन्हे उनके वृद्ध हो जाने पर उनका सहारा बनना चाहिए उनकी लाठी बनना चाहिए ।

भानुप्रताप ज्वाला
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

BEST EDUCATION

Education that gives useful knowledgefoe self employment and independent life is needed ever.

The need of the hour for that is education reforms to make it helpful for whole life.

Not only books knowledge but also knowledge about life world nature universe is best.
Best knowledge only can make democracy best to cherish for governance of nations !

SHYAMLI CHANDRAWANSHI
M.sc 1st sem. chemistry

छोटा सा गाँव मेरा पूरा बिग बाजार था

छोटा सा गाँव मेरा पूरा बिग बाजार था ....
एक नाई, एक मोची, एक काला लुहार था ....
छोटे-छोटे घर थे, हर आदमी बड़ा दिलदार था ....
कही भी रोटी खा लेते, हर घर में भोजन तैयार था ....
बाड़ी की सब्जी मजे से खाते थे।
जिसके आगे शाही पनीर बेकार था ....
दो मिनट की मैगी ना, झटपट दलिया तैयार था ....
नीम की निगौरी और शहतुत सदाबहार था ....
छोटा सा गांव मेरा पूरा बिग बाजार था ....
अपना घड़ा कस के बजा लेते, समारु पूरा संगीतकार था ....
मुल्तानी माटी से तालाब में नहा लेते, साबुन और स्विमिंग पूल बेकार था....
और फिर कबड्डी खेल लेते, हमें कहां क्रिकेट का खुमार था ....
दादी की कहानी सुन लेते, कहाँ टेलीविजन और अखबार था ....
भाई-भाई को देख के खुश था, सभी लोगों में बहुत प्यार था ....
छोटा सा गाँव मेरा पूरा बिग बाजार था ।।

सरोजनी चन्द्रवंशी
एम.एस-सी. प्रथम सेमेस्टर

CHEMICAL SOCIETY

Our collage's chemical society unites science enthusiast with the transforming power of chemistry in an inclusive environment on campus the society is a student offilitate chapter of the chemistry department that aims to create enthusiasm about role in our daily lives.

The formation of chemical society works to encourage young student exposing them to fun and interesting aspects chemistry through lectures social eventa and philantropic opprtunities member of chemical socienty participate in events such as earth day ozone day etc.

Our very active chemical society formed by department of chemistry on 25 septembar 2023 in guidance of princepal Dr.L.K. tiwari sir HOD of deparment of chemistry Dr.M.K. tyagi sir and guest lecturer miss tikeshwari keshri mam the president of our chemical society khyuti chandravanshi and gendlal jayswaltreasurer neetu tandan, secretary priya pandey and joint secretary shyamli chandrawanshi.

our very active Vice-President chemical society is run entirely by students and has no membership fee for chemistry students! everyone gets encouraged to get involved in activies from UG to PG students and even staff will organies activities events orgaized by our chemical society.

02/08/2023 power point presentation.
on 2nd August 2023 chemical society organized power point presentation headed by Dr. L.K. tiwari, Dr. D.P. chandrawanshi, Dr. M.K. tyagi on the occossion of birth anniversary of great chemist Dr. Praful chandra roy.

16/08/2023 one day seminar
on 16 August 2023 chemical society organized one day seminar headed by Dr. M.K. tyagi whose main orator is Mr. hitesh sir tells us about how to crack competitive exam.

20/09/2023 one day seminar
on September 20 one day seminar is organized on career guidance which is headed by Dr. L.K. tiwari sir and whose main orator is Dr. M.K. tyagi sir tells us about career guidance

KHYATI CHANDRAWANSHI
(president of chemical society)

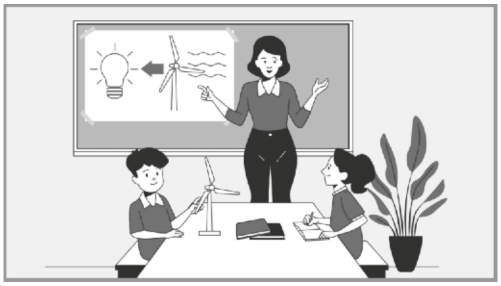

एक कदम व्यवसाय की ओर

अगर आपके पास दिमाग है तो आप कही से भी पैसा कमा सकतें है ?

आज के समय मे हम सभी के दिमाग मे कुछ न कुछ नई बिजनेस आइडियाज आते ही रहते है । जोकि अपने आप मे बहुत यूनिक होता है बस जरूरी है उन पर अमल करना। अगर आपके पास भी ऐसी ही कोई नई बिजनेस आईडिया है । और आपके पास उसमें इन्वेस्टमेंट करने के लिए बहुत ज्यादा पैसा नही हो तो आप कम पैसो को निवेश करके भी अपना बिजनेस शुरु कर सकते है, बशर्ते आपको उसके मार्केट के बारे मे पूरी जानकारी हो,

ट्यूशन पढ़ाने का बिजनेस :-

अगर आप अच्छे खासे पढ़े - लिखे है तो एक छात्र के लिए यह सबसे अच्छा धन कमाने का जरिया है। जिनमें पैसो की लागत कम आती है और मुनाफा भी ज्यादा होता है। यह काम आप अपनी पढ़ाई के साथ शुरु कर सकते हैं। अगर आपको किसी विषय का बहुत अच्छा ज्ञान है तो आप इस ज्ञान को बाँट कर अच्छा पैसा कमा सकते है। ट्यूशन पढ़ाने का काम आप छोटे बच्चे से शुरु करे ताकि आपके अंदर की झिझक भी निकल जाए और आप इस अपनी काबिलियत के अनुसार अपने स्टूडेंट बढ़ा सकते है । बिजनेस की रेस मे अक्सर वही लोग शमिल होते है । जिनको अपने आप पर विश्वास होता है ।

अजय निषाद
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

प्रभु की भक्ति

प्रभु का भजन कर ले, यही जीवन का सबेरा ।
सब कुछ है तेरा प्रभु, कुछ नही है मेरा ।।

खाली हाथ आये है खाली हाथ जायेंगे, यही जीवन का है फेरा।
सब कुछ है तेरा प्रभु, कुछ नही है मेरा ।।

सृष्टि के कण-कण में, प्रभु का है बसेरा ।
सब कुछ है तेरा प्रभु, कुछ नही है मेरा ।।

जीवन के सुख-दुःख में, प्रभु खड़ा है मेरा ।
सब कुछ है तेरा प्रभु, कुछ नही है मेरा ।।

अमित चन्द्रवंशी
एम.ए. हिन्दी साहित्य
(प्रथम सेमेस्टर)

इंसान

इंसान एकमात्र ऐसा प्राणी है जो बुद्धिबल के कारण सब प्राणियों में श्रेष्ठ स्थान रखता है।
हमारी ये धरती आकाश और अनंत तक फैला विशाल ब्रम्हाण्ड है।
इंसान को किसने बनाया और किसलिए बनाया, इसका जवाब आजतक इंसान ढूँढ नही सका।
अपना मंजिल तो तय है श्मशान जाना, बाकी जीवन की अनेक क्रिया है मात्र एक बहाना ।
इस पूरी दुनिया में इंसान ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जिसका जहर उसके दाँतो मे नही बल्कि बातों में होता है ।
लोग कड़वी बातें बोलकर भूल जाते है, लोग पत्थर को इसलिए पूजते है
क्योकि विश्वास के लायक इंसान नही मिल पाते है।

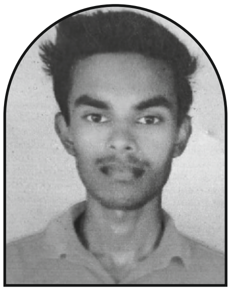

दिलीप कुमार पनागर
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

स्वाभिमान

आजकल कुछ शोर ज्यादा है हवा मे, या है तो वो बहरे की आदत है पुरानी।
खुद की तरीकों की लत उनको लगी। क्यूँ करें जनता यहाँ उनकी गुलामी।
सबको है मालूम अपने हक बराबर, क्यों विषमता को उपजने दें यहाँ हम।
आओ मिलकर एक धारा में बहें सब तोड़ दे मन से किसी की अब गुलामी।
अर्थ बल को मान इतना क्यूँ भला दे, मान देंगे हम सदा कौशल कला को।
जो हो जितना योग्य वैसा काम दो, सब को समृद्धि सबको मान दो।
हम जियें सब शान से और नाम ऊँचा हो हमारा, काम ऐसा हम करें जो, नाम रोशन हो हमारा।
बंद कर तू चीखना क्यूँ भीड़ का हिस्सा बना, खुद का तू निर्माण कर वक्त को अपना बना।
रुकना नही तुम लक्ष्य से पहले कही आराम को, रख सदा ही खुद से आगे हर जरुरी काम को ।

संतोषी श्रीवास
बी.ए. तृतीय वर्ष

माँ का महत्व

माँ एक ऐसा शब्द है, जिसके महत्व के विषय मे जितनी भी बात की जाये कम ही है । हम माँ के बिना अपने जीवन की कल्पना भी नही कर सकते है। माँ की महानता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इंसान भगवान का नाम लेना भले ही भूल जाये लेकिन माँ का नाम लेना कभी भी नही भूलता है। माँ को प्रेम व करुणा का प्रतीक माना गया है। एक माँ दुनिया भर के कष्ट सहकर भी अपनी संतान को अच्छी से अच्छी सुख - सुविधाएँ देना चाहती है।

एक माँ अपने बच्चों से बहुत ही ज्यादा प्रेम करती है वह भले ही खुद भूखी सो जाये लेकिन अपने बच्चों को खाना खिलाना नही भूलती है। हर व्यक्ति के जीवन में उसकी माँ एक शिक्षक से लेकर पालनकर्ता जैसी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसलिए हमें अपनी माँ का सदैव सम्मान करना चाहिए, क्योंकि ईश्वर हमसे भले ही नाराज हो जाये लेकिन एक माँ बपने बच्चों से कभी नाराज नही होती है। यही कारण है कि हमारे जीवन में माँ के इस रिश्ते को अन्य सभी रिश्तों से इतना महत्वपूर्ण माना गया है।

किरण साहू
बी.ए. तृतीय वर्ष

चन्द्रयान

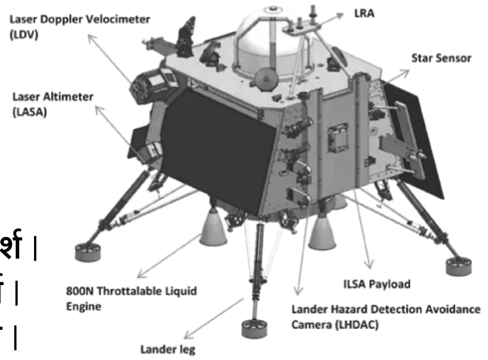

सभी ने भेजा है संदेश।
देखने को मामा का देश।
तीसरी कोशिश हो स्वीकार।

प्रथम है भेंट प्रथम संस्पर्श।
मिलन में लगे हजारों वर्ष।
पुनर्जीवित हो सब संबंध।

बढ़ाने भारत माँ का मान।
गए है ''विक्रम'' संग '' प्रज्ञान''।
न रोये अब '' इसरो '' की टीम।
यही पूरे भारत का ड्रीम।

संभालो चन्द्रयान का भार।
भेंट कर दो स्वागत का हार।
रहे ऊँचा भारत का शीश।
देश दे दो अपना आशीष ।

तृप्ति जायसवाल
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

संसार में श्रेष्ठ क्या है ?

संसार मे सबसे श्रेष्ठ क्या है ? फूल या काटे, प्रेम या पीड़ा, संपन्नता या दरिद्रता, मित्र या शत्रु .... । अवश्य फूल, प्रेम, संपन्नता व मित्र ही श्रेष्ठ है ....

परंतु क्या आपने अपने जीवन में कभी सोचा है, कि हर एक भाव, हर एक वस्तु, हर एक घटना का एक गुणधर्म होता है .... । त्वचा पर जलन पैदा करने वाले फूलों से अधिक श्रेष्ठ वो कांटे है । जिन से आप घर के बाहर रुँघते है ताकि अन्य पशु भीतर न आ सके ।

वह प्रेम श्रेष्ठ नही जो आपको अंधा लोभी पक्षपाती बना दे। वो घृणा श्रेष्ठ है जो आपको नया मार्ग दिखा दे .... ।
वह संपन्नता श्रेष्ठ नही जो आपको कृपण बना दे हटाना है वो दरिद्रता श्रेष्ठ है जो आपको जीवन में परिश्रम करने की शिक्षा दे

कु-विचार देने वाले, बुरा मार्ग दिखने वाले मित्र से अधिक श्रेष्ठ है वह शत्रु होते है जो हमें जीवन का लक्ष्य दे दे .... ।
इसलिए अपने जीवन में हर वस्तु, हर भाव, हर घटना के गुण धर्म को पहचानिए और उसके पश्चात उसका चयन कीजिए ... ।

बिरेन्द्र सिंह चौहान
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

कोशिश से कामयाबी

रामपुर नामक एक गाँव था | उस गाँव में रमेश नाम का एक लड़का रहता था | वह पढ़ने में बहुत कमजोर था | उसके भाई-बहन और उसके मित्र हमेशा अच्छे अंको से उत्तीर्ण होते थे परन्तु रमेश को कम अंक मिलते थे, इस लिए उसे हमेशा शर्मिन्दा होना पड़ता था |

रमेश नौवीं कक्षा में दूसरी बार अनुत्तीर्ण हुआ तो उसे बहुत दुख हुआ | वह निराश हो गया और आगे बढ़ने की उसकी भावना समाप्त हो गई | परीक्षा फल पता चलने पर उसने सोचा की अब कौन सा मुंह लेकर घर जाऊँ ? इस बदनामी को झेलने की अपेक्षा मर जाना अच्छा है | यह विचार मन में आते ही रमेश सबकी नजर बचाकर गांव के निटक सुनसान जंगल में चला गया | उसने आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया था | रमेश एक पेंड़ की डाल पर रस्सी का फंदा डालने लगा | रस्सी बांधते समय अचानक उसकी नजर एक मकड़ी पर गई | मकड़ी पेंड़ पर चढ़ने का प्रयास कर रही थी,परन्तु बार-बार नीचे गिर जाती थी |

वह कई बार पेंड़ पर चढ़ी और गिरी फिर भी उसने हार नहीं मानी | वह लगातार कोशिश करती रही |अंत में वह पेड़ पर चढने में सफल हो गई | मकड़ी की सफलता को देखकर रमेश की निराशा गाायब हो गई | मकड़ी से उसे जी-तोड़ परिश्रम करने की प्रेरणा मिली | उसने सोचा " जब छोटी सी मकड़ी अपने प्रयत्न में सफल हो सकती है,तो मैं क्यों नही हो सकता हूँ? मुझे भी असफलता से निराशा नही होना चाहिए |

मकड़ी से सफलता का ज्ञान पाकर रमेश घर लौट गया | उस दिन से खूब ध्यान लगाकर पढ़ने लगा | इस बार परीक्षा में उसे सुनहरा सफलता मिली | सभी ने उसकी प्रशंसा की |

सीख -: मनुष्य को असफलता से निराश नही होना चाहिए | मेहनत और लगन से काम करने पर ही सफलता मिलती है |

प्रतिमा चन्द्रवंशी
बी.ए. तृतीय वर्ष

विज्ञान पर कविता

ऑक्सीजन हमारा प्राणदाता, हाइड्रोजन ज्वलनशील है।

नाइट्रोजन है आग रोकता, पोटैशियम उर्वरक का दिल है।

क्लोरीन जल को शुद्ध करता है, कैल्शियम हड्डियों को जोड़ता है

आयरन जहाज से लेकर बनाता कोल है, बेरियम से ही फोटोग्राफी का रोल है।

हीलियम बनता है सूर्य में ज्यादा, कार्बन होता कोयले मे ज्यादा।

नियौन और ऑर्गन अक्रिय गैसे है, स्टील बनाने में क्रोमियम भी शामिल है ।

सोडियम - मैग्नीशियम बहुत मुलायम है, एल्युमिनियम से बनते विद्युत सामान है।

रेडियम होता बहुत चमकीला, क्रिप्टन बम से बचना मुश्किल है ।

थोरियम-यूरेनियम से परमाणु ऊर्जा, सोना-चांदी होते विद्युत के अति सुचालक।

कॉपर के बर्तन भी सोने जैसा लगता है। चांदी सौर प्लेट निर्माण में शामिल है ।

निर्मला मोहले
एम.एस-सी.
तृतीय सेमेस्टर

कविता

यहां सब कुछ बिकता है, दोस्तो रहना जरा संभल के।
बेचने वाले हवा भी बेच देते है, गुब्बारे मे डाल के।
सच बिकता है, झूठ बिकता है, बिकती है, हर कहानी।
तीनों लोक मे फैला है फिर भी, बिकती है बोतल मे पानी।
कभी फूलों की तरह मत जीना, जिस दिन खिलोगे टूट के बिखर जाओगे
जीना है तो पत्थर की तरह जियो, जिस दिन तरासे गये तो खुदा बन जाओगे
हम कोशिश ही ना करे, ये तो गलत बात है
हारना तब आवश्यक हो जाता है, जब लड़ाई अपनो से हो
और जीतना तब आवश्यक हो जाता है, जब लड़ाई अपने आप से हो।

नीता पटेल

कहानी

एक गाँव में अचल नाम का लड़का था। उसके पिता जी एक सरकारी कर्मचारी थे। जिसका दूसरे शहर मे पोस्टिंग हो गया था। अचल बहुत खुश था क्योंकि वह दूसरे शहर जा रहा था अचल पढ़ाई मे बहुत तेज था। तभी ट्रेन एक स्टेशन पर जा रुकी। ट्रेन कुछ समय के लिए रुकी तो अचल मे सोचा कि ट्रेन रुका है तो पानी ले आता हूँ। फिर अचल ट्रेन से उतरकर पानी लेने गया। नल पर बहुत ज्यादा भीड़ थी। जब अचल का नम्बर आया तो ट्रेन की सीटी बजने लगी। अचल के पिता जी ने घबराकर आवाज लगाई रहने दो अचल अगले स्टेशन पर लें लेंगे। वह दौड़ा ट्रेन चलने लगी। घबराहट में अचल ने अपने हाथ को डिब्बे के हैडिल पर ठीक से रख नही पाया पैर फिसला और स्टेशन पर हल्ला गच गया । उसके बाद क्या हुआ अचल को याद नही था । होश आया तो वह अस्पताल के बेंड पर पड़ा था। माँ को राती और पिता जी को गुमसुम देखकर वह कुछ समझ नही पाया। फिर जब उसे पता चला कि वह एक पैर गवाँ चुका है तो वह तड़प उठा। पूरा अस्पताल उसे चक्कर खाता सा लग रहा था। और फिर वह दिन भी आया जब अचल बैसाखियों के सहारे चलता नए स्कूल मे प्रवेश लेने गया। पिता जी भी साथ थे कुछ लड़के उसे इस तरह से देखने लगे थे जैसे वह कोई जानवर हो। और अब कल उसे फिर स्कूल जाना था अचल सोच रहा था कि आखिर क्यों हँसते है ? लड़के उस पर, जरुर उन्हे कोई मजा मिलता होगा। इससे वह चीढ़ता है रोता है तो वे समझते होगे कि उन्होने उसे हरा दिया। लेकिन अगर वह चिढ़े नही रोए नही तो अगर वह उन्हे जता दे कि वह अपने लँगड़े पन की कोई परवाह नही करता तो उनका सारा मजा ही किरकिरा (खराब) हो जाएगा तब वे समझ जाएँगे कि लँगड़ेपन की खिल्ली उड़ाकर उसे चिढ़ाने, सताने की कोशिश करना बेकार है । वह तो खुद ही अपनी टाँग को हंसने की चीज समझता है। उसके मुरझाएँ होठों पर मुस्कान खिल उठी फिर पता नही वह कब सो गया । फिर अगले दिन वह स्कूल गया। कक्षा में जाते ही उसने देखा कि कई लड़को की आँखे उसे आश्चर्य से घूर रही थी। कक्षा का शोर अचानक घीमा हो गया । कई लड़के उसपे बहुत हँसने लगे। उसकी खिल्ली उड़ाने लगे । फिर एक लड़के ने अचल से पूछा कि क्यों अचल हम लोग तुम्हे इतना चिढ़ाते है तो तुम्हे बुरा नही लगता क्या? तो अचल पहले तो चुप रहा फिर कहा मैने तो अपने ऊपर से गुजरती हुई ट्रेन को सहा है दोस्त । हल्का - फुलका मजाक भला मेरा क्या बिगाड़ पायेगा । फिर भी अचल ने हिम्मत नही हारी और उन लोगों को हँसी उड़ाने दिया और अचल स्कूल आकर उन लोंगों का मुँह बंदकर दिया जो उनकी खिल्ली उड़ाते थे ।

इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमें खुद पर विश्वास और हिम्मत कभी नही छोड़नी चाहिए ।

कल्याणी साहू
बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

करके 12 वीं पास अब

करके 12 वीं पास अब...
आगे थोड़ा बढ़ने है...
चलो आज हम कॉलेज जाते है...
चलो आज हम कॉलेज जाते है...

नए-नए से हम गए...
सफर में ही थक गए
सोच रहे थे पहुंचेंगे कैसे?
सोच-सोच कर पहुंच गए

कॉलेज का सिलेबस तो
स्कूल से कुछ अलग होता है
एक साल का सिलेबस
यहां महीने में कवर होता

हम भी बैठे-बैठे
कुछ समझने की कोशिश करते है
कुछ-कुछ समझ आता है
कुछ सर के ऊपर निकल जाता है

खत्म करके क्लास को
सब बाहर घुमने जाते है
देखते है सारे लड़कियाँ
और बहाना कैंपस का बनाते है

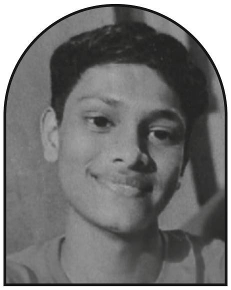

संदीप चन्द्रवंशी

इस कहानी से सीख

यह कहानी तीन भाई की है। ज्ञान, धन और विश्वास तीनों का नाम है। तीनों एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे। ये तीनों भाई एक दूसरे के दोस्त जैसे रहते थे। एक बार किसी वजह से तीनों को एक दूसरे से अलग होना पड़ा। तो तीनों ने एक दूसरे से सवाल किया कि आज के बाद हम कहा मिलेंगे। तो इस पर ज्ञान ने कहा मै मंदिर मस्जिद और किताबों में मिलूंगा। धन ने कहा मै अमीरों के पास मिलूंगा विश्वास चुप रहा और कुछ नही बोला जब दोनों भाई ने उसें चुप रहने का कारण पूछा तो विश्वास ने रोते हुए कहा, मै एक बार चला गया तो कभी नहीं मिल सकूंगा। एक छोटी सी कहानी हमें यह सिखाती है, की हम जानते है कि ज्ञान और धन जब चाहे कमा सकतें है लेकिन विश्वास कभी नहीं कमा सकतें।

विश्वास एक ऐसी चीज है जो एक बार टूट जाये तो वापस आना बहुत मुश्किल है।

हेमा साहू
बी.एस-सी प्रथम वर्ष

माता-पिता का दुःख

रामपुर नामक गाँव था उस गाँव में एक बूढ़े माता पिता रहते थे और उसका एक बेटा था। उसके बेटे का नाम भूपेश था उसके माता पिता अपने बेटे से बहुत प्यार करते थे उसके माता पिता ने अपने बच्चे को किसी भी चीज की जरुरत नही पड़ने दिया। उसने जो माँगा उसके माता पिता ने लाकर दिया जब भूपेश पढ़-लिख कर बड़ा हुआ तो उसे एक काबिल इंसान बनाया फिर भूपेश नौकरी करने लगा और उसके माता पिता ने भूपेश की शादी करा दिया फिर कुछ सालों बाद भूपेश को लगने लगा कि इतने पैसो से मैं घर को नही चला पाऊँगा और मेरे माता पिता कुछ कमाते धमाते तो नही है मुफ्त में खा रहे है। फिर भूपेश ने एक दिन अपने माता पिता को घर से बाहर निकाल दिया और कहने लगा कि इस घर में कभी मत आना। भूपेश के ऐसा कहते ही भूपेश के माता पिता रोने लगे उसके माता पिता कहने लगे कि जिस बेटे को पढ़ाया लिखाया उसी बेटे ने हमे घर से निकाल दिया। अरे हमे क्या चाहिए, हमारा बेटा हमारे पास बैठकर दो चार बातें कर ले यही तो चाहते है इतना कहते दोनों रोने लगे।

सीख -: इससे हमें यह सीख मिलती है कि हमे आपने माता पिता को घर से नही निकालना चाहिए क्योंकि आज जहां भी देखो कितने बेटे होंगे जिन्होनें अपने माता पिता को घर से निकाल दिया है इस कहानी के माध्यम से बताना चाहती हूं कि अपने माता पिता की सेवा करो और उन्हे हमेशा खुश रखो, अगर माता पिता न हो तो तुम कितना भी अमीर क्यों न हो जाओं पर तुम हमेशा गरीब ही रहोगें क्योंकि माता पिता ही तुम्हारे शुभ चिंतक है

कितना भी लिखूँ कम है
सच तो यह है कि
माँ बाप है तो हम है ।
एक माँ से चार बेटे पाले गये
लेकिन चार बेटों से एक माँ बाप
पाले नही गये ।

संध्या चन्द्रवंशी
बी.एस-सी प्रथम वर्ष

माँ की दुनियाँ

माँ की दुनियाँ उसके बच्चों से शुरु और बच्चों पर खत्म हो जाती है । चोट मुझे लगती है दर्द उन्हे होता है मार देती थप्पड़ तो खुद भी रोती है। दरवाजे पर पहुँचते ही बस्ता हमारा थाम लेती। पापा की डाँट से हमें कैसे भी बचा लेती है। मेरे हर वक्त की भूख का अहसास उन्हे है होता मैं कितना खाऊँगा यह पहले से ही जानती है। मेरे हर निवाले की खुशियों दिखती जब वह मुझे खिलाती और मै खा लेती। मेरे पेट भरने का सुकून उनके चेहरे पर होता। यह सोचकर आँखे मेरे सजल हो जाती है। मेरे पास माँ नहीं है, मै माँ किसे पुकारुँ माँ की दुनियाँ उसके बच्चों से शुरु और बच्चों पर खत्म हो जाती है।

शिवरानी निर्मलकर
बी.ए. तृतीय वर्ष

क्या आप युवा हैं? युवा वह है

- जिसमें बड़े सपने देखने का साहस है।
- जो अपने सपने पुरा करने के लिए पूर्ण आत्माविश्वास एवं उत्साह से मेहनत करता है।
- जो अपने आप को कमजोर नही मानता बल्कि स्वयं को ईश्वर की सर्वोत्तम कृति समझता है।
- जो सकारात्मक ऊर्जा एवं आशावादी दृष्टिकोण से कार्य करता है।
- जो उपलब्ध अवसरों एवं संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करता है।
- जो सामाजिक दुर्गुणों से दूर रहता है।
- जो स्वाभिमानी स्वावलंबी तथा दूसरों को इसके लिए प्रेरित करता है।
- जो पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता के लिए जागरुक रहता है।
- जो नारी शक्ति का सम्मान करता है।
- जो अन्याय एवं अनीति के विरुध्द लड़ता है।
- जो बातों का बादशाह नहीं बल्कि कर्मो का शहंशाह होता है।

श्रद्धा चन्द्रवंशी
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष

जिन्दगी

ऐ जिन्दगी तू अपना मुकाम बता दे। मंजिल न सही कोई राह गुजर ही मिला दे...
कहीं तेज धुप में तपती, कहीं शाम के इंतजार मे है तू
कभी बिन वजह हँसती रहती, कभी हँसते-हँसते रोती है तू
क्या है तेरा इरादा तेरा पता बता दे, ऐ जिन्दगी तू अपना मुकाम बता दे...

तन्हा रातों में कागज कलम सी। कभी-कभी कागजों में कोरेपन की सुगंध है तू।
बिन खत का लिफाफा बतौर है। जैसे टुकड़ों-टुकड़ों मे विखरी सी है तू
कहां है तेरी मंजिल या तेरा अशियाना बता दे

ऐ जिन्दगी तू अपना मुकाम बता दे, मंजिल न सही कोई राह गुजर ही मिला दे ।।

श्याम सिंह
एम.एस-सी.
तृतीय सेमेस्टर

बेटी के लिए दो शब्द

सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, पार्वती देवी कहने को अवतार है बेटी
जीवन का हर बाग - बगीचा करती तो गुलजार है बेटी,
घर गली, सड़क-मोहल्ले और सजाती सबका घर द्वार है बेटी।
जीवन की डुबती नैया को बचाने खेवनहार है बेटी,
पापियों के नाश हेतु चंडी का अवतार है बेटी।
ये सब तो कहने की बात है क्योंकि आज भी भार है बेटी।

सहोद्रा यादव
एम.ए. हिन्दी
प्रथम सेमेस्टर

विविध कार्यक्रम

राष्ट्रीय सेवा योजना

X+FJ8, Pandatarai, Chhattisgarh 491559, I
Longitude
5422°
81.34912399°

GPS Map Camera
Madanpur Khurd, Chhattisgarh, India
699C+86F, Madanpur Khurd, Chhattisgarh 491559, India
Lat 22.218758°
Long 81.369996°

अटल बिहारी वाजपेयी शास. महाविद्यालय पाण्डातराई
हिन्दी विभाग
हिन्दी साहित्य परिषद गठन सत्र - 2023-24

भोरमदेव मंदिर